UPSSSC PET मैराथन 2022
History का महासंग्राम

byjusexamprep.com

History

भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाओं का कालक्रम (Chronology)

प्राचीन भारत

वर्ष	घटना	महत्व
2 मिलियन ईसा पूर्व से 10,00 ईसा पूर्व 2 मिलियन ईसा पूर्व से 50,000 ईसा पूर्व 50,000 ईसा पूर्व से 40,000 ईसा पूर्व 40,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व	पाषाण काल पूर्व पाषाण काल मध्य पाषाण काल अपर पाषाण काल	आग की खोज चूने पत्थर से बने औजारों का प्रयोग किया गया। इनके अवशेष छोटा नागपुर पठार और कर्नूल जिले में प्राप्त हुए हैं।
10,000 ईसा पूर्व से	मध्य पाषाण काल	शिकारी और चरवाहे सूक्ष्मपाषाण औजारों का प्रयोग
7000 ईसा पूर्व	नव पाषण काल	अनाज उत्पादक पॉलिश उपकरणों का प्रयोग
पूर्व-हड़प्पा काल - 3000 ईसा पूर्व	ताम्र युग	प्रथम धातु - तांबे का प्रयोग
2500 ईसा पूर्व	हड़प्पा काल	कांस्ययुगीन सभ्यता, शहरी सभ्यता का विकास
1500 ईसा पूर्व-1000 ईसा पूर्व	पूर्व-वैदिक काल	ऋगवैदिक काल
1000 ईसा पूर्व-500 ईसा पूर्व	उत्तर वैदिक काल	महाजनपदों की स्थापना के साथ दूसरे शहरी चरण का विकास

byjusexamprep.com

600 ईसा पूर्व - 325 ईसा पूर्व	महाजनपद	16 राज्यों के साथ विशेष राजतंत्र स्थापित हुए
544 ईसा पूर्व - 412 ईसा पूर्व	हरयण्क वंश	बिम्बसार, अजातशत्रू और उदयिन
412 ईसा पूर्व - 342 ईसा पूर्व	शिशुनाग वंश	शिशुनाग और कालाशोक
344 ईसा पूर्व - 323 ईसा पूर्व	नन्द वंश	महापद्मनंद
563 ईसा पूर्व	गौतम बुद्ध का जन्म	बौद्ध धर्म की स्थापना
540 ईसा पूर्व	महावीर का जन्म	जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर
518 ईसा पूर्व	पार्सियों का आक्रमण	डैरियस
483 ईसा पूर्व	प्रथम बुद्ध परिषद	राजगीर
383 ईसा पूर्व	द्वितीय बुद्ध परिषद	वैशाली
326 ईसा पूर्व	मेसोडोनियाई आक्रमण	ग्रीक और भारत के मध्य सीधा संपर्क
250 ईसा पूर्व	तृतीय बुद्ध परिषद	पाटलीपुत्र
322 ईसा पूर्व - 185 ईसा पूर्व 322 ईसा पूर्व - 298 ईसा पूर्व	मौर्य काल चंद्रगुप्त मौर्य बिंदुसार	भारत का राजनैतिक एकीकरण, अशोक की धम्म नीति, कला और वास्तुशिल्प का विकास

byjusexamprep.com

298 ईसा पूर्व - 273 ईसा पूर्व 273 ईसा पूर्व - 232 ईसा पूर्व 232 ईसा पूर्व - 185 ईसा पूर्व	अशोक उत्तरवर्ती मौर्य	
185 ईसा पूर्व - 73 ईसा पूर्व	शुंग वंश	पुष्यमित्र शुंग
73 ईसा पूर्व - 28 ईसा पूर्व	कण्व वंश	वासुदेव ने वंश की स्थापना की
60 ईसा पूर्व - 225 ईसवी	सातवाहन वंश	राजधानी- पैथान, महाराष्ट्र
2 ईसा पूर्व	इंडो-यूनानी	मिनांडर (165 ईसा पूर्व -145 ईसा पूर्व)
1 ईसा पूर्व - 4 ईसवी	शक	रुद्रदामन (130 ईसवी - 150 ईसवी)
1 ईसा पूर्व - 1 ईसवी	पारसी	गोंडोफेरेन्स के शासन में सेंट थॉमस भारत आए
1 ईसवी -4 ईसवी	कुषाण	कनिष्क (78 ईसवी - 101 ईसवी)
72 ईसवी	चतुर्थ बुद्ध परिषद	कश्मीर
3 ईसा पूर्व - 3 ईसवी	संगम काल	संगम संघ सम्मेलन, चेर, चोल और पांड्य शासक
319 ईसवी - 540 ईसवी 319 – 334 ईसवी 335 – 380 ईसवी 380 – 414 ईसवी	गुप्त काल चंद्रगुप्त I समुद्रगुप्त चंद्रगुप्त II कुमारगुप्त	319 ईसवी - गुप्त काल भारत का स्वर्ण युग विविध कला एवं साहित्य का विकास मंदिर निर्माण की नगाड़ा शैली

byjusexamprep.com

415 – 455 ईसवी 455 – 467 ईसवी	स्कंदगुप्त	
550 ईसवी - 647 ईसवी	वर्धन वंश	हर्ष (606-647 ईसवी) कन्नौज और प्रयाग सभा का आयोजन हुआ हुएन-शांग हर्ष के काल में आया
543 – 755 ईसवी	वातापी के चालुक्य	विसरा कला का विकास
575 - 897 ईसवी	कांची के पल्लव	द्रविड़ शैली में मंदिर निर्माण की शुरूआत

मध्यकालीन भारत

प्रारंभिक मध्यकाल (650 – 1206 ईसवी)

वर्ष	**घटना**	**महत्व**
750 – 1150 ईसवी	पाल का शासन	मुंगेर, बिहार में राजधानी
752 – 973 ईसवी	राष्ट्रकूट	मालखेड़ में राजधानी
730 – 1036 ईसवी	प्रतिहार	पश्चिमी भारत पर शासन किया
712 ईसवी	प्रथम मुस्लिम आक्रमण	महमूद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया
850 – 1279 ईसवी	चोल	राजधानी-तंजौर, द्रविण स्थापत्य कला का स्वर्ण काल
998 – 1030 ईसवी	प्रथम तुर्की आक्रमण	गजनी के महमूद

byjusexamprep.com

1175 – 1206 ईसवी	द्वितीय तुर्की आक्रमण	गोरी के महमूद
1178 – 1192 ईसवी	पृथ्वीराज चौहान	पृथ्वीराज और मुहम्मद गोरी के मध्य 1191 में तराइन का प्रथम युद्ध 1192, तराइन का द्वितीय युद्ध

सल्तनत काल (1206 – 1526 ईसवी)

गुलाम वंश

1206 – 1210 ईसवी	कुतुबद्दीन ऐबक	लाल बख़्स के नाम से ज्ञात, कुतुबमीनार की नींव
1211 – 1236 ईसवी	शमशुद्दीन इल्तुतमिश़	दिल्ली
1236 – 1240 ईसवी	रज़िया सुल्तान	भारत पर शासन करने वाली पहली और एकमात्र मुस्लिम महिला
1240 – 1266 ईसवी	कमजोर उत्तराधिकारी	
1266 – 1287 ईसवी	गियासुद्दीन बलबन	दीवान-ए-अर्ज की स्थापना

खिलजी वंश

1290 – 1296 ईसवी	जलालुद्दीन ख़िलजी	खिलजी वंश के संस्थापक
1296 – 1316 ईसवी	अलाउद्दीन ख़िलजी	कईं प्रशासनिक सुधार किए, द़ाग और चेहरा पद्धति की शुरूआत की

तुगलक वंश

1320 – 1325 ईसवी	गियासुद्दीन तुगलक	संस्थापक

1325 – 1351 ईसवी	मोहम्मद-बिन-तुगलक	प्रशासनिक सुधार लेकर आए और कई महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को लागू किया
1351 – 1388 ईसवी	फिरोजशाह तुगलक	महान शहरों की स्थापना की
1398 – 1399 ईसवी	तैमूर आक्रमण	चंगेज खां के वंशज तैमूर ने मुहम्मद शाह तुगलक के शासनकाल में आक्रमण किया

लोधी वंश 1451 – 1526 ईसवी

1451 – 1488 ईसवी	बहलोल लोदी	लोदी वंश की स्थापना
1489 – 1517 ईसवी	सिकंदर लोदी	आगरा शहर की स्थापना की
1517 – 1526 ईसवी	इब्राहिम लोदी	बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित किया

विजयनगर और बहमनी राज्य

विजयनगर राज्य		
1336 – 1485 ईसवी	संगम वंश	हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापना
1485 – 1505 ईसवी	सुलुव वंश	सलुव नरसिम्हा
1505 – 1570 ईसवी	तुलुव वंश	वीर नरसिम्हा
1509 – 1529 ईसवी	कृष्ण देव रॉय	बाबर के समकालीन एक प्रतिभाशाली विद्वान
1570 – 1650 ईसवी	अरावीडू वंश	तिरुमल द्वारा स्थापित

बहमनी राज्य		
1347 – 1358 ईसवी	अलाउद्दीन हसन बहमन शाह	गुलबर्गा में बहमनी साम्राज्य की स्थापना की

byjusexamprep.com

1397 – 1422 ईसवी	ताज-उद्दीन फिरोज शाह	
1422 – 1435 ईसवी	अहमद शाह वली	

मुगल साम्राज्य

1526 – 1530 ईसवी	बाबर	पानीपत के प्रथम युद्ध के बाद मुगल साम्राज्य की स्थापना की
1530 – 1540 ईसवी 1555 – 1556 ईसवी	हुमांयु	शेरशाह सूरी द्वारा पराजित
1540 – 1555 ईसवी	सूर साम्राज्य	शेरशाह ने हुमांयु को हराया और 1540-45 ईसवी तक शासन किया
1556 ईसवी	पानीपत की दूसरी लड़ाई	अकबर बनाम हेमू
1556 – 1605 ईसवी	अकबर	दीन-ए-इलाही की स्थापना की, मुगल साम्राज्य का विस्तार किया
1605 – 1627 ईसवी	जहांगीर	कैप्टन विलियम हॉकिन्स और सर थॉमस रो, मुगल दरबार में पधारे
1628 -1658 ईसवी	शाहजंहा	मुगल साम्राज्य एवं कला और स्थापत्य का उत्कृष्ट समय
1658 – 1707 ईसवी	औरंगजेब	मुगल साम्राज्य के पतन की शुरूआत
1707 – 1857 ईसवी	उत्तरवर्ती मुगलशासक	अंग्रेजों के ताकतवर बनने के साथ ही मुगल साम्राज्य में फूट

मराठा राज्य और मराठा संघ

byjusexamprep.com

मराठा राज्य 1674 – 1720 ईसवी		
1674 – 1680 ईसवी	शिवाजी	औरंगजेब के समकालीन और दक्कन में मुगलों की सबसे बड़ी चुनौती
1680 – 1689 ईसवी	शंभाजी	
1689 – 1700 ईसवी	राजाराम	
1700 – 1707 ईसवी	ताराबाई	
1707 – 1749 ईसवी	साहू	पेशवा का उदय
1713 – 1720 ईसवी	बालाजी विश्वनाथ	प्रथम पेशवा

मराठा संघ 1720 – 1818 ईसवी		
1720 – 1740 ईसवी	बाजी राव I	
1740 – 1761 ईसवी	बालाजी बाजी राव	
1761 ईसवी	पानीपत का तृतीय युद्ध	अहमद शाह अब्दाली द्वारा मराठों की हार
1761 – 1818 ईसवी	उत्तरवर्ती शासक	

आंग्ल-मराठा युद्ध		
1775 – 1782 ईसवी	प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध	ब्रिटिश की हार
1803 – 1806 ईसवी	द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध	मराठों की हार हुई और उन्होंने सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए

1817 – 1818 ईसवी	तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध	मराठों की निर्णायक रूप से हार हुई

आधुनिक भारत

बंगाल		
1717 – 1727 ईसवी	मुर्शिद कुली खान	बंगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद स्थानांतरित की गई
1727 – 1739 ईसवी	शुजाउद्दीन	
1739 – 1740 ईसवी	सरफ़राज खान	
1740 – 1756 ईसवी	अलिवर्दी खान	
1756 – 1757 ईसवी	सिराजुद्दौला	प्लासी की लड़ाई
1757 – 1760 ईसवी	मीर ज़ाफर	
1760 – 1764 ईसवी	मीर कासिम	बक्सर का युद्ध

मैसूर

1761 – 1782 ईसवी	हैदर अली	आधुनिक मैसूर राज्य की स्थापना
1766 – 1769 ईसवी	प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध	हैदर अली ने अंग्रेजों को हराया
1780 – 1784 ईसवी	द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	हैदर अली की सर आयरकूट के हाथों पराजय हुई
1782 – 1799 ईसवी	टीपू सुल्तान	द्वितीय युद्ध जारी रहा
1790 – 1792 ईसवी	तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	टीपू ने आधे से अधिक राज्य जीत लिया
1799	चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	टीपू सुल्तान की मृत्यु

पंजाब

byjusexamprep.com

1792 – 1839 ईसवी	महाराज रणजीत सिंह	सिक्ख शासन की स्थापना
1845 – 1846 ईसवी	प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध	सिक्ख पराजित हुए
1848 – 1849 ईसवी	द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध	डलहौजी ने पंजाब का विलय किया

भारत में यूरोपीयों का आगमन

1498	पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी	कोचीन और गोवा में मुख्यालय स्थापित किए
1600	ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी	मद्रास, कलकत्ता और बम्बई
1602	डच ईस्ट इंडिया कंपनी	पुलिकट, नागापट्टनम
1616	डैनिश ईस्ट इंडिया कंपनी	सेराम्पोर
1664	फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी	पांडिचेरी

कर्नाटक युद्ध

1746-48	प्रथम आंग्ल-फ्रांस युद्ध	एक्स-ला-चापल की संधि
1749-54	द्वितीय आंग्ल-फ्रांस युद्ध	पांडिचेरी की संधि
1758-63	तृतीय आंग्ल-फ्रांस युद्ध	पेरिस की संधि

स्वतंत्रता संघर्ष

1857	प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम युद्ध	सामाजिक-धार्मिक और आर्थिक कारणों के कारण क्रांति
1885	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन	ए. ओ. ह्यूम
1885 – 1905	नरमपंथी काल	दादाभाई नारौजी और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का प्रभुत्व
1905 – 1917	चरमपंथी काल	लाल-बाल-पाल और अरविंदो घोष का प्रभुत्व
1905	बंगाल विभाजन	कर्ज़न द्वारा बंगाल विभाजन की घोषणा

byjusexamprep.com

1905 – 1908	स्वदेशी आंदोलन	विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
1906	मुस्लिम लीग का गठन	
1906	INC का कलकत्ता सत्र (INC: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस)	स्वराज को लक्ष्य बनाया गया
1907	सूरत विभाजन	पूरे भारत में आंदोलन के विस्तार पर प्रश्न
1909	मार्ले-मिंटो सुधार	मुस्लिमों के लिए पृथक निर्वाचन
1915 – 1916	होमरूल आंदोलन	बाल गंगाधर तिलक और ऐनी बेसेंट
1916	लखनऊ समझौता	कांग्रेस और लीग के मध्य समझौता
1916	लखनऊ सत्र	कांग्रेस में चरमपंथियों का प्रवेश

गांधी काल

प्रारंभिक जीवन		
1893 – 1914	दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी	नैटल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की, अंग्रेजों की ज्यादतियों के खिलाफ सत्याग्रह और सी.डी.एम.
1915 – 1948	भारत में गांधी जी	
1915	बंबई पहुंचे। प्रथम दो वर्ष भारत का भ्रमण किया और किसी राजनैतिक आंदोलन में भाग नहीं लिया	
1917	चंपारण अभियान	नील की खेती के किसानों के समर्थन में
1918	अहमदाबाद	प्रथम भूख हड़ताल
1918	खेड़ा	प्रथम असहयोग आंदोलन

byjusexamprep.com

1919	रॉलेट सत्याग्रह	रॉलेट एक्ट और जलियावाला बाग नरसंहार के खिलाफ
1920-22	असहयोग और खिलाफ़त आंदोलन	
1924	बेलगांव सत्र	गांधी जी कांग्रेस के अध्यक्ष नियुक्त हुए
1930 - 34	नागरिक अवज्ञा आंदोलन	दांडी यात्रा गांधी-इरविन समझौता द्वितीय गोलमेज सम्मेलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से चालू हुआ
1940-41	व्यक्तिगत सत्याग्रह	
1942	भारत छोड़ो आंदोलन	करो या मरो

इस काल के दौरान महत्वपूर्ण घटनाएं

1919	रॉलेट एक्ट	गांधी जी ने रॉलेट सत्याग्रह का आवाहन किया
1919	जलियावाला बाग नरसंहार	
1920-22	खिलाफ़त और असहयोग आंदोलन	हिंदु मुस्लिम एकता
1922	चौरी चौरा कांड	गांधी जी ने एन.सी.एम. वापिस लिया
1923	कांग्रेस खिलाफ़त स्वराज दिवस	विधायी परिषद में प्रवेश
1927	साइमन कमीशन	1919 अधिनियम की समीक्षा करने के लिए सभी श्वेत कमीशन
1928	नेहरू समिति की रिपोर्ट	संविधान के सिद्धांत तय करने के लिए
1929	जिन्ना के 14 सूत्र	
1929	लाहौर सत्र	पूर्ण स्वराज
1930	नागरिक अवज्ञा आंदोलन	दांडी यात्रा

byjusexamprep.com

1931	गांधी-इरविन समझौता	गांधी जी ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया
1931	लंदन में दूसरा गोलमेज सम्मेलन आयोजित हुआ	
1932	साम्प्रदायिक पंचाट	
1932	पूना समझौता	
1935	भारत सरकार अधिनियम	अंनतिम स्वायत्ता
1937	कांग्रेस का 18 महीने का शासन शुरू हुआ	
1939-45	द्वितीय विश्व युद्ध की शुरूआत	
1939	कांग्रेस मंत्रियों ने इस्तीफा दिया	
1940	अगस्त प्रस्ताव	लिनलिथगो ने विश्व युद्ध में भारत से सहायता करने के लिए आग्रह किया
1941	व्यक्तिगत सत्याग्रह	
1942	क्रिप्स मिशन	
1942	भारत छोड़ो आंदोलन	
1943	गांधी जी का 21 दिन का उपवास	
1944	सी. आर. सूत्र	
1945	वॉवेल योजना और शिमला समझौता	
1945	आई.एन.ए मुकदमा	
1946	आर.आई.एन. रेटिंग विद्रोह	
1946	कैबिनेट मिशन योजना	

byjusexamprep.com

1946	अंतरिम सरकार का गठन	
1946	संविधान सभा का गठन	
1947	एटली की घोषणा	
1947	माउंटबेटेन योजना	
1947	भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947	

सिंधु घाटी सभ्यता

जॉन मार्शल, 'सिंधु घाटी सभ्यता' शब्द का प्रयोग करने वाले पहले विद्वान थे। सभ्यता का विकास 2500 ईसा पूर्व - 1750 ईसा पूर्व में हुआ।

भौगोलिक विस्तार

1. **सीमा:** सिन्धु घाटी सभ्यता, पश्चिम में सुत्कागंदोर (बलुचिस्तान) से पूर्व में आलमगिरपुर (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) तक और उत्तर में मंडु (जम्मू) से दक्षिण में डायमाबाद (अहमदनगर, महाराष्ट्र) तक फैली हुई हैं ।

byjusexamprep.com

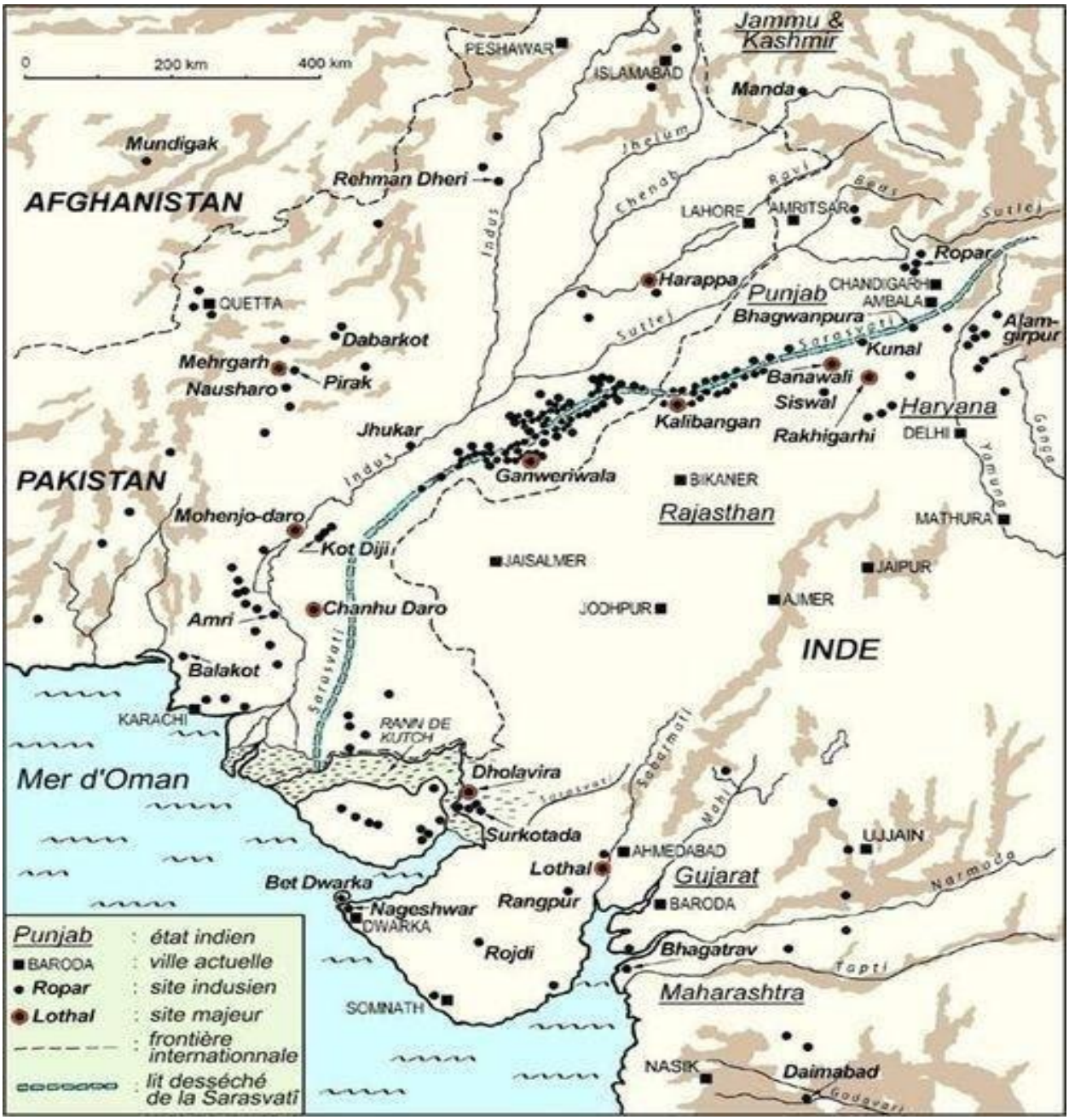

Image source: NCERT

2. प्रमुख शहर

शहर	नदी	पुरातात्विक महत्व
हड़प्पा (पाकिस्तान)	रावी	6 अनाजों की एक पंक्ति, देवी माता की मूर्ति
मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान)	सिंधु	अनाज, बृहत स्नानागार, पशुपति महादेव की मूर्ति, दाढ़ी वाले आदमी की मूर्ति और एक नर्तकी की कांस्य की मूर्ति

लोथल (गुजरात)	भोगवा	बंदरगाह शहर, दोहरी कब्रगाह, टेराकोटा की अश्व की मूर्तियां
चन्हूदड़ो (पाकिस्तान)	सिंधु	बिना दुर्ग का शहर
धौलावीरा (गुजरात)	सिंधु	तीन भागों में विभाजित शहर
कालिंबंगा (राजस्थान)	घग्घर	जुते हुए खेत
बनवाली (हरियाणा)	घग्घर	-
राखीगढ़ी (हरियाणा)	-	-
रोपड़ (हरियाणा)	-	-
मिताथल (हरियाणा)	-	-
भगतराव (गुजरात)	-	-
रंगपुर (गुजरात)	-	-
कोट दिजी (पाकिस्तान)		
सुत्कागंदोर (पाकिस्तान)	-	-
सुकोताडा (पाकिस्तान)	-	-

शहर योजना एवं संरचना

- शहर योजना की ग्रिड प्रणाली (शतरंज-बोर्ड)
- ईंट की पंक्तियों वाले स्नानागार और सीढियों वाले कुओं के साथ आयताकार घर पाए गए हैं।
- पकी ईंटों का इस्तेमाल
- भूमिगत जल निकास व्यवस्था
- किलाबंद दुर्ग

सिंधु घाटी सभ्यता की कृषि

byjusexamprep.com

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेंड़ और सुअर का पालन किया जाता था।
- गधे और ऊंट का प्रयोग बोझा ढ़ोने में किया जाता था।
- हाथी और गेंडे की जानकारी थी।
- सुतकांगेडोर में घोड़ों के अवशेष और मोहनजोदड़ो और लोथल में घोड़े के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। लेकिन सभ्यता घोड़े पर केंद्रित नहीं थी।

प्रौद्योगिकी और शिल्पकला

- कांस्य (तांबे और टिन) का व्यापक प्रयोग
- पत्थर के औजारों का प्रचलन
- कुम्हार द्वारा निर्मित पहियों का पूर्णत: उपयोग
- कांस्य आभूषण, सोने के आभूषण, नाव-बनाने, ईंट बिछाने आदि अनेक व्यवसाय पाए गए थे।

व्यापार: सिंधु घाटी सभ्यता

- अनाज, वज़न और माप, सील्स और यूनीफार्म स्क्रिप्ट की उपस्थिति व्यापार के महत्व का प्रतीक है।
- वस्तु-विनिमय प्रणाली का व्यापक उपयोग।
- लोथल, सुतकांगेडोर व्यापार के लिए प्रयोग किए जाने वाले बंदरगाह शहर थे।
- व्यापार स्थल- अफगानिस्तान, ईरान और मध्य एशिया। मैसोपोटामिया सभ्यता से संपर्क के भी दर्शन होते हैं।

राजनीतिक संगठन

- एक मजबूत केंद्रीय प्राधिकरण के माध्यम से प्राप्त सांस्कृतिक एकरूपता
- किसी मंदिर या धार्मिक संरचना की उपस्थिति के साक्ष्य नहीं पाए गए। हड़प्पा संभवत: व्यापारिक वर्ग द्वारा शासित था।
- हथियारों का प्रयोग के ज्यादा साक्ष्य नहीं मिले

धार्मिक प्रथाएं

- देवी माता की टेराकोटा की मूर्ति
- फल्लू और योनि पूजा
- पशुपति महादेव की मूर्ति उनके पैरों के पास दो हिरण सहित हाथी, बाघ, गेंडे और एक सांड से घिरी हुई पाई गई।

पेड़ और पशु पूजा

- पीपल के पेड़ की पूजा के साक्ष्य मिले
- गेंडे के रूप में एक सींग वाले यूनीकॉर्न और कूबड़ वाले सांड़ की पूजा सामान्य रूप से दिखती थी।
- भूत और आत्माओं को भगाने के लिए ताबीज का प्रयोग

हड़प्पा की लिपि: सिंधु घाटी सभ्यता

- हड़प्पा की लिपि पिक्टोग्राफिक (Pictographic) ज्ञात थी लेकिन अब तक इसकी व्याख्या नहीं की गई है।
- ये पत्थरों पर मिलती है और केवल कुछ शब्द ही प्राप्त हुए हैं
- हड़प्पा की लिपि भारतीय उप-महाद्वीप में सबसे पुरानी लिपि है

वजन एवं मापन

- व्यापार और वाणिज्य आदि में निजी संपत्ति के खातों की जानकारी को रखने के लिए मानकीकृत भार और मापन की इकाई का उपयोग
- तौल की इकाई 16 के गुणज में थी

हड़प्पा में मिट्टी के बर्तन

- पेंड़ों और गोलों की आकृति सहित अच्छी तरह निर्मित मिट्टी के बर्तनों की तकनीक
- लाल रंग के बर्तनों पर काले रंग के डिजाइन का चित्रण

सील्स

- सील्स का प्रयोग व्यापार या पूजा के लिए किया जाता था।
- सील्स पर भैंस, सांड़, बाघ आदि के चित्र पाए गए हैं

चित्र

- एक नग्न महिला की कांस्य की प्रतिमा और दाढ़ी वाले आदमी की शैलखटी (steatite) प्रतिमा मिली है

टेराकोटा मूर्तियां

- टेराकोटा- आग में पकी मिट्टी
- खिलौनों या पूजा की वस्तुओं के रूप में उपयोग
- हड़प्पा में पत्थर का भारी काम देखने को नहीं मिला, जो पत्थर के खराब कलात्मक कार्यों को दर्शाता है

उत्पत्ति, परिपक्वता और पतन

- पुरानी-हड़प्पा बस्तियां- नीचे का सिंध प्रांत, बलूचिस्तान और कालीबंगन
- परिपक्व हड़प्पा- 1900 ईसा पूर्व- 2500 ईसा पूर्व
- सभ्यता के पतन के कारण

i. निकट के रेगिस्तान के विस्तार के कारण खारेपन में बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप प्रजनन क्षमता में कमी
ii. भूमि के उत्थान में अचानक गिरावट से बाढ़ का आना
iii. भूकंपों ने सिंधु सभ्यता के दौरान परिवर्तन किए
iv. हड़प्पा सभ्यता आर्यों के हमलों से नष्ट हो गई

बाद का शहरी चरण (<u>Post-urban Phase)</u> (1900 ईसा पूर्व- 1200 ईसा पूर्व)

- उप- सिंधु सभ्यता (Sub-Indus Culture)
- प्राथमिक ताम्र
- बाद की हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न चरणों में अहार सभ्यता, मालवा सभ्यता और जार्व (Jorwe) सभ्यता का विकास

पूर्व वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व- 1000 ईसा पूर्व)

a. आर्य 1500 ईसा पूर्व के दौरान भारत में आये और पूर्वी अफगानिस्तान, एन.डब्ल्यू.एफ.पी, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किनारों के पास बस गए। इस पूरे क्षेत्र को सात नदियों की धरती के नाम से जाना जाता था।

b. आर्यों का उनके स्वदेशी निवासी दस्युस से संघर्ष हुआ और आर्यों के प्रमुख जिन्होंने उनसे जबरदस्ती की उन्हें त्रसादस्यु कहा जाता था।

c. सप्त सिंधु को ऋगवेद में प्रदर्शित किया गया है। सिंधु, सर्वोत्कृष्ट नदी है, जब कि सरस्वती अथवा नदीतरण ऋगवेद की नदियों में से सर्वश्रेष्ठ है।

ऋगवैदिक नाम	आधुनिक नाम
सिंधु	सिंधु
वितस्ता	झेलम
असिकनी	चिनाब
परूशनी	रावी
विपास	बीस
सुतुद्री	सतलुज

वैदिक चरण के बाद (1000 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व)

वैदिक काल के बाद का इतिहास मुख्य रूप से वैदिक ग्रंथों पर आधारित है जो कि ऋग्वेद आधार पर संकलित है।

1. उत्तर वैदिक ग्रंथ

a. वेद संहिता

1. **सामवेद** – ऋग्वेद से लिए गए भजनों के साथ मंत्रों की पुस्तक। यह वेद भारतीय संगीत के लिए महत्वपूर्ण है।
2. **यजुर्वेद** – इस पुस्तक में यज्ञ सम्बन्धी कर्मकांड और नियम सम्मिलित हैं।
3. **अथर्ववेद** – इस पुस्तक में बुराइयों और रोगों के निवारण के लिए उपयोगी मंत्र शामिल हैं|

b. ब्राह्मण – सभी वेदों के व्याख्यात्मक भाग होते हैं। बलिदान और अनुष्ठानों की भी बहुत विस्तार से चर्चा की गई है।

1. **ऋग्वेद –** ऐत्रेय और कौशितिकी ब्राह्मण
- 10 मंडल (किताबें) में विभाजित 1028 स्तोत्र शामिल हैं
- तृतीय मंडल में, गायत्री मंत्र, देवी सावित्री से संबोधित है।
- X मंडल पुरुषा सुक्ता से सम्बंधित हैं
- एत्रेय और कौशितिकी ब्राह्मण
- **यजुर्वेद** – शतापत और तैत्तरिया
- **सामवेद –** पंचविशा, चांदोग्य, शद्विन्श और जैमिन्या
- **अथर्ववेद -** गोपाथा

c. अरण्यकस – ब्राह्मणों से सम्बन्धों को समाप्त करते हुए, तपस्वियों तथा वनों में रहने वाले छात्रों के लिए मुख्यतः लिखी गई पुस्तक को अरण्यकस भी बोला जाता है।

d. उप-निषद – वैदिक काल के अंत में प्रदर्शित होने पर, उन्होंने अनुष्ठानों की विलोचना की और सही विश्वास और ज्ञान पर प्रकाश डाला।

नोट- सत्यमेव जयते, मुंडका उपनिषद से लिया गया हैं।

2. वैदिक साहित्य – बाद में वैदिक युग के बाद, बहुत सारे वैदिक साहित्य विकसित किए गए, जो संहिताओं से प्रेरित थे जो स्मृती-साहित्य का पालन करते हैं, जो श्रुति-शब्द की ओर मुथ परंपरा के ग्रंथों में लिखा गया था। स्मृति परंपरा में महत्वपूर्ण ग्रंथों को निम्न भागों में विभाजित किया गया है।

a. वेदांग

1. शिक्षा - स्वर-विज्ञान
2. कल्पसूत्र – रसम — रिवाज
   सुल्वा — सूत्र
   गृह्य — सूत्र
   धर्म सूत्र
3. व्याकरण – ग्रामर
4. निरुक्ता - शब्द-साधन
5. छंद - मैट्रिक्स
6. ज्योतिष - एस्ट्रोनोमी

SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

b. स्मृतियां

1. मनुस्मृति
2. यज्नावाल्क्य स्मृति
3. नारद स्मृति
4. पराशर स्मृति
5. बृहस्पति स्मृति
6. कात्यायना स्मृति

c. महाकाव्य

1. रामायण
2. महाभारत

d. पुराण

1. **18** महापुराण **–** ब्रह्मा, सूर्य, अग्नि, शैव और वैष्णव जैसे विशिष्ट देवताओं के कार्यों को समर्पित। इसमें भागवत पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण आदि शामिल हैं।
2. **18** उप-पुराण - इसके बारे में कम जानकारी उपलब्ध है।

e. उपवेद

1. आयुर्वेद **-** दवा
2. गन्धर्ववेद**-** संगीत
3. अर्थवेद **-** विश्वकर्मा
4. धनुर्वेद - तीरंदाजी

f. शाद-दर्शन या भारतीय दार्शनिक विद्यालय

1. संख्या
2. योग
3. न्याय
4. वैशेषिका
5. मीमांसा

6. वेदांता

बौद्ध धर्म और जैन धर्म

1) उत्पत्ति के कारण

- ब्राह्मण नामक पुरोहित वर्ग के प्रभुत्व के विरुद्ध क्षत्रियों की प्रतिक्रिया। महावीर और गौतम बुद्ध, दोनों क्षत्रिय कुल के थे।
- वैदिक बलिदानों और खाद्य पदार्थों के लिए मवेशियों की अंधाधुंध हत्याओं ने नई कृषि अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर दिया, जो खेती करने के लिए मवेशियों पर निर्भर थी। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म दोनों इस हत्या के विरुद्ध खड़े हो गए थे।
- पंच चिन्हित सिक्कों के प्रचलन और व्यापार एवं वाणिज्य में वृद्धि के साथ शहरों के विकास ने वैश्यों के महत्व को बढ़ावा दिया, जो अपनी स्थिति में सुधार करने के लिए एक नए धर्म की तलाश में थे। जैन धर्म एवं बैद्ध धर्म ने उनकी जरूरतों को सुलझानें में सहायता की।
- नए प्रकार की संपत्ति से सामाजिक असमानताएं पैदा हो गईं और आम लोग अपने जीवन के प्रारंभिक स्वरूप में जाना चाहते थे।
- वैदिक धर्म की जटिलता और अध: पतन में वृद्धि हुई।

2) जैन धर्म और बौद्ध धर्म और वैदिक धर्म के बीच अंतर

- वे मौजूदा वर्ण व्यवस्था को कोई महत्व नहीं देते थे।
- उन्होंने अहिंसा के सुसमाचार का प्रचार किया।
- उन्होंने ब्राह्मण द्वारा निंदित धन उधारदाताओं सहित वैश्यों को शामिल किया।
- वे साधारण, नैतिकतावादी और तपस्वी जीवन को पसंद करते थे।

बौद्ध धर्म

1) गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान पर शाक्य वंश के राजा के यहां हुआ था। इनकी माता कौशल वंश की राजकुमारी थीं। 29 वर्ष की आयु में बुद्ध के जीवन के चार दृश्य उन्हें त्याग के मार्ग पर ले गए। वे दृश्य निम्नानुसार थे-

- एक बूढ़ा आदमी
- एक बीमार व्यक्ति

- एक सन्यासी
- एक मृत व्यक्ति

बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएं

घटना	**स्थान**	**प्रतीक**
जन्म	लुम्बनी	कमल और सांड
महाभिनिष्क्रमण	-	घोड़ा
निर्वाण	बोध गया	बोधि वृक्ष
धर्मचक्र प्रवर्तन	सारनाथ	चक्र
महापरिनिर्वाण	कुशीनगर	स्तूप

2) बौद्ध धर्म के सिद्धांत

a. चार आर्य सत्य

1. दुख- जीवन दुखों से भरा है।
2. समुदाय - ये दुखों का कारण होते हैं।
3. निरोध- ये रोके जा सकते हैं।
4. निरोध गामिनी प्रतिपद्या- दुखों की समाप्ति का मार्ग

b. अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

c. **मध्य मार्ग-** विलासिता और मितव्ययिता दोनों का त्याग करना

d. त्रिरत्न- बुद्ध, धर्म और संघ

3) बौद्ध धर्म की मुख्य विशेषताएं और इसके प्रसार के कारण

1. बौद्ध धर्म को ईश्वर और आत्मा पर विश्वास नहीं था।
2. महिला की संघ में प्रविष्टि स्वीकार्य थी। जाति और लिंग से पृथक संघ सभी के लिए खुला था।
3. पाली भाषा का प्रयोग किया गया, जो आम लोगों के बीच बौद्ध सिद्धांतों के प्रसार में मददगार सिद्ध हुई।
4. अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया और इसे मध्य एशिया, पश्चिम एशिया और श्रीलंका में फैलाया।
5. **बौद्ध सभाएं**

- **प्रथम परिषद:** प्रथम परिषद वर्ष 483 ईसा पूर्व में राजा अजातशत्रु के संरक्षण में बिहार में राजगढ़ के पास सप्तपर्णी गुफाओं में आयोजित की गई, प्रथम परिषद के दौरान उपाली द्वारा दो बौद्ध साहित्य विनय और सुत्ता पिताका संकलित किए गये।
- **द्वितीय परिषद:** द्वितीय परिषद वर्ष 383 ईसा पूर्व में राजा कालाशोक के संरक्षण में वैशाली में आयोजित की गई थी।
- **तृतीय परिषद:** तृतीय परिषद वर्ष 250 ईसा पूर्व में राजा अशोक महान के संरक्षण में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी, तृतीय परिषद के दौरान अभिधम्म पिताका को जोड़ा गया और बौद्ध धर्म के पवित्र ग्रंथ त्रिपिटक को संकलित किया गया।
- **चतुर्थ परिषद:** चतुर्थ परिषद वर्ष 78 ईस्वीं में राजा कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के कुण्डलवन में आयोजित की गई थी, चतुर्थ परिषद के दौरान हीनयान और महायान को विभाजित किया गया था।

5) बौद्ध धर्म का महत्व और प्रभाव

a. साहित्य

1. त्रिपिटक
   सुत्त पिताका- बुद्ध के वचन
   विनय पिताका- मठ के कोड
   अभिधम्म पिताका- बुद्ध के धार्मिक प्रवचन
2. मिलिंदपान्हों- मींदर और संत नागसेना के बीच के संवाद
3. दीपावाम्श (Dipavamsha) और महावाम्श (Mahavamsha) – श्रीलंका का महान इतिहास

4. अश्वघोष के द्वारा बौद्धचरित्र

b. संप्रदाय

1. **हीनयान (Lesser Wheel)-** ये निर्वाण प्राप्ति की गौतम बुद्ध की वास्तविक शिक्षाओं में विश्वास करते हैं। वे मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते और हीनयान पाठ में पाली भाषा का प्रयोग करते थे।
2. **महायान (Greater Wheel)-** इनका मानना है कि निर्वाण गौतम बुद्ध की कृपा और बोधिसत्व से प्राप्त किया जा सकता है न कि उनकी शिक्षा का पालन करके। ये मूर्ति पूजा पर विश्वास करते थे और महायान पाठ में संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे।
3. **वज्रायन-** इनका मानना है कि निर्वाण जादू और काले जादू की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है।

c. बोधिसत्व

1. वज्रपाणि
2. अवलोकितेश्वरा या पद्मपाणि
3. मंजूश्री
4. मैत्रीय
5. क्शितिग्रह
6. अमिताभ/अमित्युषा

d. बौद्ध धर्म की वास्तु कला

- **पूजा का स्थल-** बुद्ध या बोधिसत्व के अवशेषों वाले स्तूप। चैत्य, प्रार्थना कक्ष जबकि विहार, भिक्षुओं के निवास स्थान थे।
- **गुफा वास्तुकला का विकास-** जैसे गया में बराबर गुफाएं
- **मूर्ति पूजा और मूर्तियों का विकास**
- **उत्कृष्ट विश्वविद्यालयों का निर्माण जिसने पूरे विश्व के छात्रों को आकर्षित किया।**

जैन धर्म

- जैन धर्म 24 तीर्थंकरों में विश्वास करता है जिसमें ऋषभदेव सबसे पहले और महावीर, बुद्ध के समकालीन 24वें तीर्थंकर हैं।

- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ (प्रतीक: नाग) बनारस के राजा अश्वसेन के पुत्र थे।
- 24वें और अंतिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर (प्रतीक: शेर) थे।
- उनका जन्म कुंडग्राम (बिहार जिला मुजफ्फरपुर) में 598 ईसा पूर्व में हुआ था।
- उनके पिता सिद्धार्थ 'ज्ञातृक कुल' के मुखिया थे।
- उनकी मां त्रिशला, वैशाली के लिच्छवी के राजा चेतक की बहन थीं।
- महावीर, बिंबिसार से संबंधित थे।
- यशोदा से विवाह के बाद बेटी प्रियदर्शनी का जन्म हुआ, जिनके पति जमाली उनके पहले शिष्य बने। 30 वर्ष की उम्र में, अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद, वह सन्यासी बन गए।
- अपने सन्यास के 13वें वर्ष (वैशाख के 10वें वर्ष) में, जृम्भिक ग्राम के बाहर, उन्हें सर्वोच्च ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई।
- तब से उन्हें जैन या जितेंद्रिय और महावीर और उनके अनुयायियों को जैन नाम दिया गया था।
- उन्हें अरिहंत की उपाधि प्राप्त हुई, अर्थात्, योग्यता। 72 वर्ष की आयु में, 527 ईसा पूर्व में, पटना के पास पावा में उनकी मृत्यु हो गई।

जैन धर्म की पांच प्रतिज्ञाएं

- अहिंसा- हिंसा न करना
- सत्य- झूठ न बोलना
- अस्तेय- चोरी न करना
- अपरिग्रह- संपत्ति का अधिग्रहण न करना
- ब्रह्मचर्य- अविवाहित जीवन

तीन मुख्य सिद्धांत

- अहिंसा
- अनेकांतवाद
- अपरिग्रह

जैन धर्म के त्रिरत्न

- सम्यक दर्शन- सम्यक श्रद्धा
- सम्यक ज्ञान- सम्यक जन

- सम्यक आचरण - सम्यक कर्म

ज्ञान के पांच प्रकार

- मति जन
- श्रुत जन
- अवधि जन
- मनाहप्रयाय जन
- केवल जन

जैन सभाएं

- **प्रथम सभा** 300 ईसा पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के संरक्षण में पाटलिपुत्र में हुई जिसके दौरान 12 अंग संकलित किए गए।
- **द्वितीय सभा** 512 ईसा में वल्लभी में हुई जिसके दौरान 12 अंग और 12 उपअंग का अंतिम संकलन किया गया।

संप्रदाय

- **श्वेतांबर-** स्थूलभद्र- जो लोग सफेद वस्त्र धारण करते थे। जो लोग अकाल के दौरान उत्तर में रहे थे।
- **दिगंबर-** भद्रबाहु- मगध अकाल के दौरान डेक्कन और दक्षिण में भिक्षुओं का पलायन। ये नग्न रहते थे।

जैन साहित्य

जैन साहित्यकार प्रकृत का प्रयोग करते थे, जो संस्कृत के प्रयोग की तुलना में लोगों की एक आम भाषा है। इस प्रकार से जैन धर्म लोगों के माध्यम से दूर तक गया। महत्वपूर्ण साहित्यिक कार्य इस प्रकार हैं-

- 12 अंग
- 12 उपअंग
- 10 परिक्रण
- 6 छेदसूत्र
- 4 मूलसूत्र

- 2 सूत्र ग्रंथ
- संगम साहित्य का भाग भी जैन विद्वानों की देन है।

महाजनपद, हर्यंका वंश, शिशुन्गा वंश, नन्द वंश

लोहे के औजारों के विस्तृत प्रयोग और कृषि अर्थव्यवस्था के विकास के कारण गंगा के मैदानों में बड़े क्षेत्रीय राज्यों का निर्माण हुआ। लोगों की जनपद या क्षेत्र के प्रति गहरी निष्ठा थी। इन राज्यों का बौद्ध और जैन साहित्य में जिक्र किया गया है। इनमें राजतंत्रात्मक और प्रजातंत्र दोनों प्रकार की व्यवस्था शामिल थी।

16 महाजनपद

- **मगध (पटना, गया और नालंदा जिला) -** प्रथम राजधानी राजगृह थी और बाद में राजधानी पाटलिपुत्र बनी।
- **अंग और वंग (मुंगेर और भागलपुर) -** इसकी राजधानी चंपा थी। यह समृद्ध व्यापार केन्द्र था।
- **मल्ल (देवरिया, बस्ती, गोरखपुर क्षेत्र) -** इसकी राजधानी कुशीनगर थी। यह कईं अन्य छोटे राज्यों की पीठ थी। इनका प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म था।
- **वत्स (इलाहाबाद और मिरज़ापुर) -** इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। इस राजवंश का सबसे शक्तिशाली राजा उदायिन था।
- **काशी (बनारस) -** इसकी राजधानी वाराणसी थी। यद्यपि कौशल राज्य के साथ कईं युद्ध लड़े गए लेकिन अंतत: काशी को कौशल राज्य में मिला लिया गया।
- **कौशल (अयोध्या) -** यद्यपि इसकी राजधानी शरावती थी जिसे साहेत-माहेत भी कहते थे लेकिन अयोध्या कौशल में एक महत्वपूर्ण शहर था। कौशल ने कपिलवस्तु के शकों के आदिवासी संघीय क्षेत्र को भी मिलाया था।
- **वज्जी (मुजफ्फ़र नगर और वैशाली) -** वज्जी आठ छोटे राज्यों के एक संघ का सदस्य था जिसमें लिच्छवी, जांत्रिक और विदेह भी सदस्य थे।
- **कुरु (थानेश्वर, मेरठ और वर्तमान दिल्ली) -** इनकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी।
- **पंचाल (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) -** इसकी राजधानी काम्पिल्य थी। पहले यह एक राजतंत्र था, बाद में एक स्वतंत्र प्रजातंत्र बन गया। इस राज्य में कन्नौज महत्वपूर्ण शहर था।
- **मत्स्य देश (अलवड़, भरतपुर और जयपुर) -** इसकी राजधानी विराटनगर थी।
- **अश्मक (नर्मदा ओर गोदावरी के मध्य) -** इसकी राजधानी पेरताई थी और ब्रह्मदत्त सबसे महत्वपूर्ण शासक था।

- **गांधार (पेशावर और रावलपिंडी) -** इसकी राजधानी तक्षशिला उत्तर वैदिक काल के दौरान व्यापार और शिक्षा (प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय) का प्रमुख केन्द्र थी।
- **कंबोज (पाकिस्तान का हजारा जिला, उत्तर-पूर्व कश्मीर) -** इसकी राजधानी राजापुर थी। हजारा इस राज्य का प्रमुख व्यापार एवं वाणिज्य केन्द्र था।
- **अवन्ति (मालवा) -** अवन्ति को उत्तर और दक्षिण दो भागों में बांटा गया था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैन थी और दक्षिणी भाग की राजधानी महिष्मति थी।
- **चेदी (बुंदेलखण्ड) -** शक्तिमति चेदी राज्य की राजधानी थी। चेदी राज्य यमुना और नर्मदा नदी के मध्य फैला हुआ था। इस राज्य के एक परिवार को बाद में कलिंगा राज्य के राजशाही परिवार में विलय कर दिया गया था।
- **सूरसेन (बृजमंडल) -** इसकी राजधानी मथुरा थी और इसका सबसे विख्यात शासक अवन्तिपुत्र था।

सोलह महाजनपद के स्रोत

- अंगुत्तर निकाय, महावस्तु (बौध्द साहित्य)
- भगवती सुट्टा (जैन साहित्य)

वंशज

हर्यंका वंश

- **बिम्बसार (544 - 492 ईसा पूर्व)**

1. हर्यंका मगध में बिम्बसार द्वारा स्थापित नए राजवंश का नाम था। इसे सेनीय भी कहा जाता था जो भारत में नियमित और स्थाई सेना रखने वाला प्रथम भारतीय था।
2. बिम्बसार बुद्ध के समकालीन था।
3. पाटलिपुत्र और राजगृह मगध राज्य की राजधानी थीं। मगध, बिहार में पटना तक फैला था।

- **अजातशत्रु (492 – 460 ईसा पूर्व)**

1. इसने अधिक आक्रामक नीति अपनाई। काशी और वज्जी पर नियंत्रण किया। राजगीर किले का निर्माण किया।
2. इसने प्रथम बुद्ध परिषद का आयोजन किया।

- **उदायिन (460 – 440 ईसा पूर्व)**

1. इन्होंने पाटलिपुत्र की स्थपना की और राजधानी को राजगीर से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया।

शिशुनाग वंश (412 – 344 ईसा पूर्व)

- लोगों ने नागदशक (अंतिम हर्यंका शासक) को हटाकर शिशुनाग को चुना और इस तरह से हर्यंका वंश का अंत हुआ।
- शिशुनाग को कालाशोक ने अपदस्थ किया। इसी ने द्वितिय बौद्ध परिषद् का आयोजन किया।

नंद वंश (344 – 323 ईसा पूर्व)

- महापद्मा नंद, नंद वंश का संस्थापक और प्रथम राजा था।
- इसने मगध वंश को हटाया और नए साम्राज्य की स्थापना की। इसे सर्वक्षत्रांटक और उग्रसेन के नाम से जाना जाता था।
- महापद्मा नंद को एकरात - एकमात्र सम्राट कहा जाता था।
- प्रारंभ में नंदों ने मगध के एक बड़े हिस्से पर शासन किया और बाद में नंद वंश की सीमाओं का उसके शासकों द्वारा हर दिशाओं में विस्तार किया गया।
- घनानंद नंद वंश का अंतिम शासक था। इसके शासन काल में एलेक्ज़ेंडर ने 326 ईसा पूर्व में उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया था।

मौर्य साम्राज्य

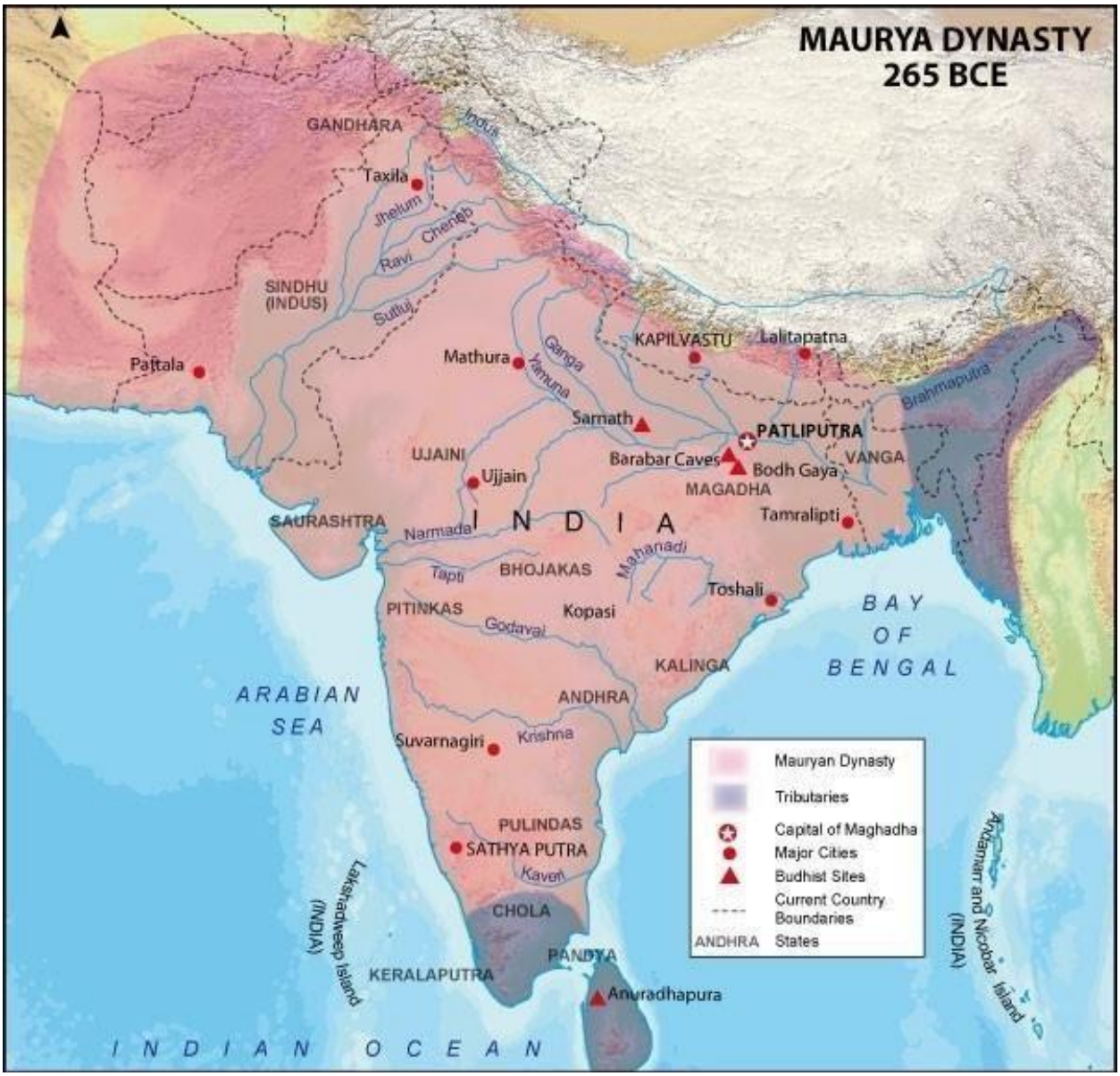

बिंदुसार (298 – 273 ईसापूर्व)

ग्रीक में इसे अमित्रघात के नाम से जाना जाता था और यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

अशोक

1. अशोक 273 ईसापूर्व में सिंहासन पर बैठा और 232 ईसापूर्व तक शासन किया। इसे 'देवप्रिय प्रियदर्शी' के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ था, ईश्वर का प्यारा।
2. अशोक ने 261 ईसापूर्व में कलिंग का युद्ध लड़ा। कलिंग आधुनिक उड़ीसा में है।
3. अशोक के शिलालेखों को सबसे पहले जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।

4. कलिंग के युद्ध के पश्चात, अशोक बौद्ध हो गया, युद्ध के आंतक से विचलित होकर, उसने बेरीघोष की जगह धम्मघोष मार्ग अपनाया।
5. अशोक को बौद्ध धर्म का ज्ञान बुद्ध के एक शिष्य उपगुप्त या निग्रोध ने दिया था।
6. बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अशोक ने धर्ममहामात्रों को नियुक्त किया।

अशोक के शिलालेख

1. अशोक के शिलालेखों में राज आज्ञा थी जिसके जरिए वह जनता से सीधे संपर्क करने में सक्षम था। ये शिलालेख और स्तंभलेख थे जिन्हें दीर्घ और लघु में बांटा गया था।
2. अशोक के 14 मुख्य शिलालेख धर्म सिद्धांत के बारे में बताते हैं।
3. कलिंग शिलालेख कलिंग युद्ध के बाद प्रशासन के सिद्धांत की व्याख्या करता है। अपने कलिंग शिलालेख में, इसने जिक्र किया है 'सभी मनुष्य मेरे बच्चे हैं'।
4. अशोक के मुख्य शिलालेख XII में कलिंग युद्ध का जिक्र किया गया है।
5. 'अशोक' का सर्वप्रथम उल्लेख केवल मास्की लघु शिलालेख में हुआ है।

भारत में विदेशी आक्रमण

ईरानी आक्रमण - 518 ईसा पूर्व

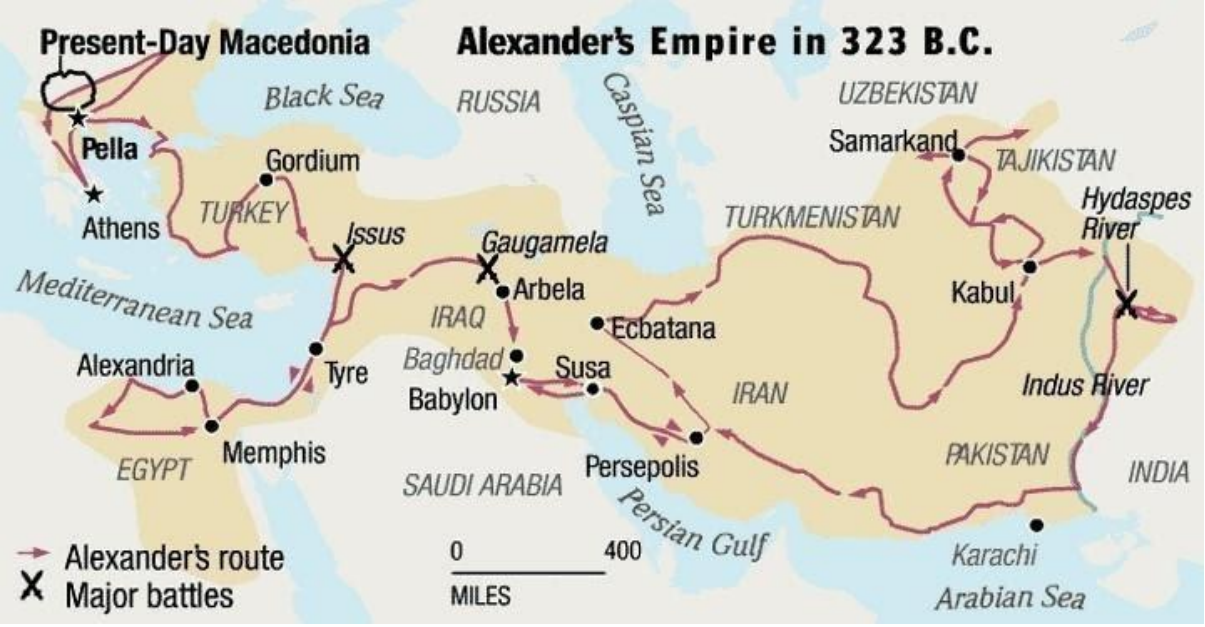

ईरानी शासक डेरियस ने 516 ईसा पूर्व में उत्तर-पश्चिम भारत में प्रवेश किया और पंजाब, सिंधु के पश्चिमी भाग और सिंध पर अधिकार कर लिया। यह ईरान का 20 वां प्रांत था और उपजाऊ

भूमि के कारण ईरान के कुल राजस्व में 1/3 भाग का योगदान देता था। डेरियस के उत्तराधिकारी ज़रसेस ने ग्रीक के खिलाफ युद्ध में बड़ी संख्या में भारतीयों को शामिल किया।

सिकन्दर (एलेक्ज़ेंडर) का आक्रमण

इसने 333 ईसा पूर्व और 331 ईसा पूर्व में डेरियस, ज़रसेस वंश के अंतिम राजा को हराया। पर्सियाई शासक के क्षेत्र पर अधिकार करने के बाद, सिकंदर ने 327 ईसापूर्व में पूर्वी अफगानिस्तान में हिंदुकुश पर्वतों को पार किया।

ईरान पर विजय पाने के पश्चात, सिकंदर ने खैबर दर्रे से होते हुए भारत में प्रवेश किया। तक्षशिला के शासक, अम्भी ने जल्द ही समर्पण कर दिया। उसका सामना पोरस से झेलम नदी पर हुआ जहां उसने हाइडेस्पीज़ के युद्ध में पोरस को पराजित किया लेकिन बाद में उसने राज्य लौटा दिया। सिकंदर व्यास नदी तक गया लेकिन उसकी सेना ने आगे जाने से मना कर दिया। वह 326-325 ईसा पूर्व तक भारत में रहा जिसके बाद उसे लौटना पड़ा।

मध्य एशिया संपर्क और उनके परिणाम

इंडो-ग्रीक

200 ईसा पूर्व में बैक्टीरियाई ग्रीकों द्वारा आक्रमणों होने शुरू हुए जिन्हें सिथीयन जनजाति ने हराया था।

1) मिनेंडर (165-145 ईसापूर्व) सबसे विख्यात शासक हुआ जिसने बाद में नागसेन की शिक्षा से बौद्ध धर्म स्वीकार किया। मिनेंडर के प्रश्नों को मिलिंदपन्हों में संकलित किया गया है।

2) भारत में सोने के सिक्के को सर्वप्रथम इंडो-ग्रीक ने जारी किया था और संभवत: वे प्रथम स्वर्ण सिक्के जारी करने वाले शासक थे जिसमें सिक्कों का उनके राजाओं से सीधा संबंध देखा जा सकता है।

3) इन्होने हेलेनिस्टक कला की विशेषता को लेकर आए जिसके जरिए गांधार कला शैली का विकास हुआ।

शक (1 - 4 ईसवीं शताब्दी)

1) शक या सीथियन ने इंडो-ग्रीक को प्रतिस्थापित किया। शकों की पांच शाखाऐं थी और उन्होंने एक बड़े क्षेत्र पर शासन किया।

byjusexamprep.com

2) विक्रम संवत् की शुरूआत 57 ईसापूर्व में हुई थी जब एक उज्जैन के एक स्थानीय राजा ने शकों को पराजित कर विक्रमादित्य की उपाधि ग्रहण की थी।

3) रुद्रदामन प्रथम (130-150 ईसवी) एक प्रसिद्ध राजा था जिसने पश्चिमी भारत पर शासन किया। उसने काठियावाड़ में सुदर्शन झील का पुनरोद्धार किया।

पार्थियन

- ये मूलत: ईरान से थे और उन्होने उत्तर-पश्चिमी भारत में शकों को हराया।
- गोंडोफेरेंस के समय में, सेंट थॉमस इसाई धर्म के प्रसार के लिए भारत आए थे।

कुषाण

- ये मध्य एशिया के चरवाहे थे जिन्होने ओक्सस से गंगा तक शासन किया।
- कडफिसेस I और II ने 50 ईसवीं से 28 साल तक शासन किया। इन्हें कनिष्क ने हराया।
- पेशावर इनकी प्रथम राजधानी और मथुरा दूसरी राजधानी थी।
- कनिष्क ने 78 ईसवी में शक संवत् की शुरुआत की थी।
- कनिष्क ने कश्मीर में बौद्ध संगति आयोजित कराके बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया जहां बौद्धों की महायान शाखा का अंतिम स्वरूप तय हुआ।

कुषाण साम्राज्य

कुषाणों की पृष्ठभूमि

- पार्थियन शासकों के बाद कुषाणों का शासन आया।
- यू-ची जनजाति पांच कुलों में विभाजित हुई थी और ये उनमें से एक थे, जिन्हें टोक्रान्स भी कहा जाता था।
- ये उत्तर मध्य एशिया के स्टेपीज़ (घास का मैदानो) से थे और खानाबदोश थे।
- सबसे पहले, इन्होने बैक्ट्रिया या उत्तरी अफगानिस्तान पर कब्जा किया। उनके द्वारा साकों को वहां से विस्थापित किया गया।
- धीरे-धीरे दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, उन्होंने हिंदू कुश को पार किया और गांधार पर कब्जा कर लिया, और उन क्षेत्रों से पार्थियन और यूनानियों को हटा दिया।
- साम्राज्य मध्य एशिया में ऑक्सस और खुरासान से लेकर उत्तर प्रदेश में गंगा और वाराणसी तक फैला हुआ था।

- कुषाणों ने मध्य एशिया, ईरान, पूरे पाकिस्तान और उत्तरी भारत के अधिकांश हिस्सों को एक शासक के अधीन लाने के लिए एकीकृत किया।

कुषाणों के राजवंश

भारत पर शासन करने वाले कुषाण जनजाति के 2 राजवंश हैं।

प्रथम:

- कडफिसेस हाउस ऑफ चीफ्स द्वारा स्थापित किया गया।
- अवधि: 50 ईसवी की शुरुआत से 28 वर्षो तक
- दो शासक कडफिसेस प्रथम (कुजुल कडफिसेस) और द्वितीय (वेमा कडफिसेस) ने इस राजवंश के तहत शासन किया।
- इन दोनों ने बड़ी संख्या में सिक्के जारी किए। कडफिसेस प्रथम ने रोमन सिक्कों के साथ में बड़ी संख्या में तांबे के सिक्कों को जारी किया। कडफिसेस द्वितीय ने सोने के सिक्के जारी किए और राज्य का सुदूर पूर्व तक विस्तार किया।

दूसरा:

- कडफिसेस राज्यवंश (हाउस ऑफ कडफिसेस) के बाद कनिष्क का शासन आया। कनिष्क राजाओं ने निम्न सिंधु बेसिन और ऊपरी भारत में राज्य का विस्तार किया। गंगा के बेसिन पर इनका बहुत अधिक अधिकार था।
- इनके द्वारा अधिक संख्या और अधिक शुद्ध सोने के सिक्के जारी किए गए, जो मुख्यतः सिंधु के पश्चिम में पाए गए।
- कनिष्क ने 230 ईसवी तक उत्तर पश्चिमी भाग पर शासन करना जारी रखा। उनके उत्तराधिकारी में से कई ने भारत में पूरी तरह से दखल दिया, और भारतीय नामों को अपनाया। वासुदेव वंश का अंतिम शासक था।

गुप्त साम्राज्य का उदय और विकास

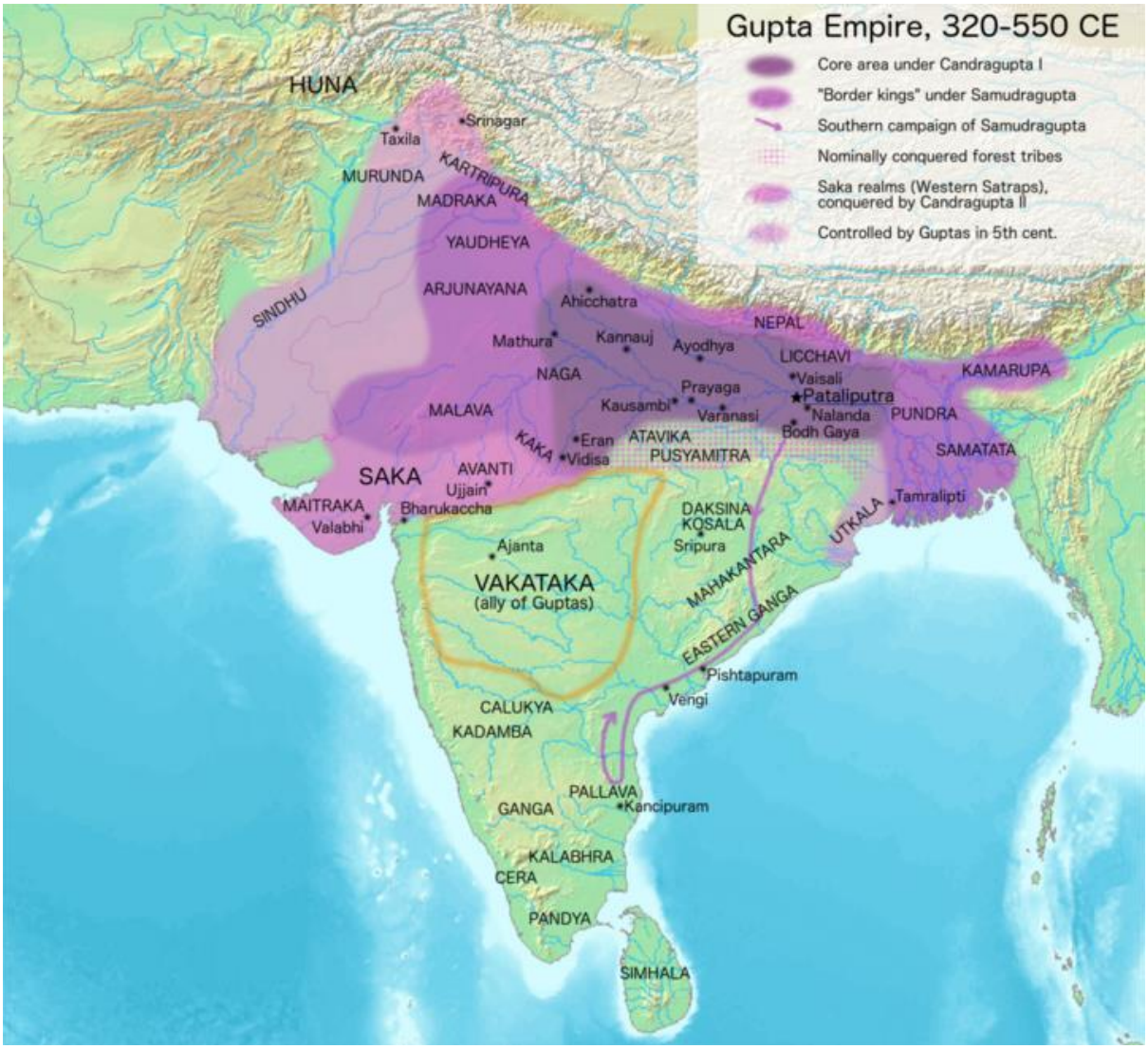

1) चंद्रगुप्त प्रथम (319-334 ईसवी)

- इन्होंने महाराजाधिराज की उपाधि ग्रहण की। लिच्छवी की राजकुमारी से विवाह किया।
- 319-320 ईसवी में गुप्त काल की शुरूआत हुई।
- असली सोने के सिक्के 'दिनार' जारी करवाए।

2) समुद्रगुप्त (335-380 ईसवी)

- इन्होंने हिंसा और युद्ध की नीति अपनाई जिसके कारण गुप्त साम्राज्य का विस्तार हुआ।

- उनके दरबारी कवि हरिषेण ने इलाहाबाद शिलालेख में इसके सैन्य अभियानों का व्यापक उल्लेख किया है।
- वह दक्षिण में कांची तक गए जिस पर पल्लवों का शासन था।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने गया में बुद्ध मंदिर बनाने की आज्ञा लेने हेतु एक धर्म-प्रचारक को भेजा।
- **समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा जाता है।**

3) चंद्रगुप्त द्वितीय (380-412 ईसवी)

- इन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- इन्होंने मालवा और गुजरात पर विजय हासिल की जिससे उसे समुद्र तक पहुंच हासिल हुई जिससे व्यापार और वाणिज्य संपर्क स्थापित हुआ। इसने उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
- इनका दरबार कालिदास और अमरसिम्हा जैसे नवरत्नों से सुशोभित था।
- इसके कारनामें कुतुब मिनार में लोहे के स्तंभ पर उत्कीर्ण हैं।
- **चीनी तीर्थयात्री फाहयान (399-414 ईसवी) ने इसके शासनकाल में भारत की यात्रा की।**

6) कला

- गुप्त काल को प्राचीन भारत का स्वर्ण काल कहा जाता है। कला धर्म से प्रेरित थी।
- चट्टान काटकर बनी गुफाएं - अजंता, ऐलोरा और बाघ की गुफाएं
- सरंचनात्मक मंदिर - देवगढ़ का दशावतार मंदिर, श्रीपुर का लक्ष्मण मंदिर, ईरान का विष्णु और वाराह मंदिर। नगाड़ा शैली के विकास ने भी भारत में संरचनात्मक मंदिर के विकास को सक्षम बनाया।
- स्तूप - सारनाथ का धामेक स्तूप, उड़ीसा का रत्नागिरी मंदिर, सिंध में मीरपुर खास का इस काल में विकास हुआ।
- चित्रकारी - अजंता और बाघ गुफा की चित्रकारी।
- मूर्तिकला - सुल्तानगंज के समीप बुद्ध की कांसे की प्रतिमा, सारनाथ और मथुरा वाद इस काल के दौरान फलेफूले जिससे बौद्ध की महायान शाखा और मूर्ति पूजा के विकास में मदद मिली।
- विष्णु, शिव और अन्य कुछ हिंदु देवताओं के चित्र भी पाए गए थे।

7) साहित्य

- धार्मिक
  रामायण, महाभारत, वायु पुराण आदि लिखे गए थे। दिगनागा और बुद्धघोष इसी काल में लिखे गए विशेष बौद्ध साहित्य थे।
- धर्म निरपेक्ष
  1. विशाखादत्त द्वारा मुद्राराक्षस
  2. कालीदास द्वारा मालविकाग्निमित्र, विक्रमोवर्षीयम, अभिज्ञानशाकुन्तलम नाटक
  3. कालीदास द्वारा रितुसंहार, मेघदूतम, रघुवंशम, कुमारसंभवम कविताएं
  4. सुद्राक द्वारा मरीचकतिका
  5. वत्सयायन द्वारा कामसूत्र
  6. विष्णु शर्मा द्वारा पंचतंत्र
- वैज्ञानिक
  1. आर्यभट्ट द्वारा आर्यभट्ट और सूर्य सिद्धांत
  2. रोमका सिद्धांत
  3. भाष्कर द्वारा महाभाष्कर्य और लघु भाष्कर्य
  4. वराहमिहिर द्वारा पंच सिद्धांत, वरिहात जातक, वरिहात संहिता

राजपूत काल

उत्तर-पश्चिमी भारत में आक्रामक और विस्तारवादी तुर्क जनजातियों का विस्तार था जिनके युद्ध का प्रमुख तरीका तेजी से आगे बढ़ना और पीछे हटना था। उत्तर-पश्चिमी भारत में गुर्जर प्रतिहारों के विघटन के कारण राजनीतिक अनिश्चितता के एक समय का उदय हुआ।

गजनवी (Ghaznavids)

- महमूद (998-1030) गजनी के सिंहासन पर बैठा।
- फिर्दुअसी, गजनी के राजसभा कवि थे। उनका लोकप्रिय कार्य “शाह नमः” ईरानी पुनर्जागरण में एक जल-विभाजक (वाटरशेड) था।
- महमूद ने मंदिरों के खजानों को लूटा एवं उन्हें ध्वस्त कर दिया। 1025 ईसवी में, उसने गुजरात में सोमनाथ मंदिर पर हमला किया और उसके खजाने को लूट लिया। उसने भारत पर 17 बार आक्रमण किया और हिन्दुशाही शासकों के विरुद्ध निरंतर लड़ाई लड़ी।
- महमूद की मृत्यु के साथ सेल्जुक साम्राज्य की स्थापना की गई थी।

राजपूत राज्य

प्रतिहार साम्राज्य के विभाजन के बाद राजपूताना राज्यों का निर्माण किया गया। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण थे:

- कन्नौज के गहदावाला
- मालवा के परमार
- अजमेर के चौहान

कुछ अन्य महत्वपूर्ण राज्य जबलपुर के समीप कलचुरी(kalachuris), बुंदेलखंड में चंदेल (chandellas), गुजरात के चालुक्य (chalukyas), दिल्ली के तोमर (tomars) इत्यादि हैं।
राजपूतों ने हिन्दू धर्म एवं जैन धर्म की कुछ हद तक सहायता की। उन्होंने वर्ण प्रणाली एवं ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों को भी कायम रखा।

तुर्की आक्रमण

- राजपूतों ने तुर्की जनजातियों के विरूद्ध एक मजबूत बचाव रखा, उन्होंने मुस्लिम व्यापारियों को अनुमति दी जिससे व्यापार एवं वाणिज्य में वृद्धि हुई।
- सेल्जुक साम्राज्य को ईरान में ख्वारिज्मी साम्राज्य से एवं घुर में घुरिड़ साम्राज्य से प्रतिस्थापित किया गया।
- जबकि चौहानों के अधिकारों में भी निरंतर वृद्धि हो रही थी, मुइज़्ज़ुदिन मुहम्मद ने गजनी को सिंहासन पर चढाया। दिल्ली के कब्जे के साथ, चौहान एवं घुरिड़ प्रत्यक्ष प्रतियोगिता में थे।
- मुहम्मद गोरी एवं पृथ्वीराज चौहान के बीच तारेन का पहला युद्ध (1191) – युद्ध में घुरिडों (ghurids) की हार हुई।
- मुहम्मद गोरी एवं पृथ्वीराज चौहान के बीच तारेन का दूसरा युद्ध (1192)– इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की हार हुई। इसके कारण दिल्ली एवं पूर्वी राजस्थान को तुर्की शासन के तहत रहना पड़ा।
- मुहम्मद गोरी ने पदों को कुतुबुद्दीन ऐबक के अधीन सौंपा, जिसने बाद में गुलाम वंश को स्थापित किया और दिल्ली सल्तनत की नींव का नेतृत्व किया। बक्थियार खिलजी को पूर्वी बेनारस के पद सौंपे गए थे।

अजमेर के चौहान

- चौहान, गुर्जर-प्रतिहारों के सामंतवादी थे।

- अजयराज चौहान, शाकम्बरी के राजा ने एक शहर की स्थापना की जिसे अजयमेरु कहा गया और बाद में इसे अजमेर के नाम से जाना गया।
- उनके उत्तराधिकारी विग्रहराज ने तोमर राजाओं से धिल्लिका (Dhillika) पर कब्जा कर लिया।
- पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद, राजवंश कमजोर पड़ गया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने राजवंश को 1197 ईसवी में हराकर अंतिम वार के साथ निपटारा किया।

दिल्ली में तोमर

- तोमर, प्रतिहारों के सामंतवादी थे।
- उन्होंने 736 ईसवी में दिल्ली शहर की स्थापना की, 9वीं-12वीं शताब्दी के दौरान, दिल्ली के तोमरों ने वर्तमान दिल्ली एवं हरियाणा के हिस्सों पर शासन किया।
- महिपाल तोमर ने 1043 ईसवी में थानेश्वर, हंसी एवं नगरकोट पर कब्जा किया।
- चौहानों ने 12वीं शताब्दी के मध्य में दिल्ली पर कब्जा किया और तोमर उनके सामंतवादी बने।

मेवाड़

मेवाड़, पश्चिमी भारत में दक्षिण-केन्द्रीय राजस्थान राज्य का एक क्षेत्र है। इसमें वर्तमान जिले भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, उदयपुर, राजस्थान के झालावाड़ जिले का पिरावा तहसील, मध्य-प्रदेश के नीमच एवं मंदसौर तथा गुजरात के कुछ भाग शामिल हैं। यह क्षेत्र राजपूत-शासित मेवाड़ राज्य या उदयपुर राज्य का एक भाग था। 1568 में, अकबर ने मेवाड़ की राजधानी, चित्तौड़गढ़ पर कब्जा कर लिया।

महाराणा सांगा (1508 - 1528)

मेवाड़ के राणा सांगा सिसोदिया वंश से संबंधित थे जो इब्राहिम लोदी एवं बाबर के समकालीन थे। खानवा, 1527 का युद्ध बाबर एवं राणा सांगा के बीच लड़ा गया था, जिसमें बाबर की विजय हुई एवं उसने उत्तरी भारत में दृढपूर्वक मुग़ल शासन की स्थापना की।

महाराणा प्रताप (1572 - 1597)

मेवाड़ के राणा प्रताप, राणा सांगा की भांति ही सिसोदिया राजपूतों से तालुक रखते थे। वह अकबर के समकालीन थे। जब अकबर ने राणा प्रताप को जागीरदार बनाने और उन्हें अकबर के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु कई राजदूत भेजे, राणा ने उन्हें अस्वीकृत कर दिया और अंबर के राजा मानसिंह । एवं महाराणा प्रताप के बीच 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा गया, जिसमें मुगलों द्वारा महाराणा प्रताप की हार हुई।

BYJU'S EXAM PREP
BYJU'S EXAM PREP SUBSCRIBE

मारवाड़

- 1194 में, गोरी के महमूद ने कन्नौज के जयचंद को हराया। उनके वंशज, शेओजी ने, मारवाड़ के मन्दौर शहर में स्वयं अर्थात् अपने साम्राज्य की स्थापना की।
- 13वीं शताब्दी में राजपूतों के राठौर वंश द्वारा जोधपुर राज्य की खोज की गई, जो कन्नौज के गहदवाला राजाओं के वंश से होने का दावा करते हैं।
- भारतीय राजसी राज्य जोधपुर के राठौड़ शासक, 8वीं शताब्दी में स्थापित हुए एक प्राचीन राजवंश के शासक थे। हालांकि, वंश का भाग्योदय 1459 में जोधपुर में राठौड़ राजवंश के प्रथम शासक *राव जोधा* के द्वारा किया गया था।

बुंदेलखंड के चंदेल

- इनकी स्थापना 9वीं शताब्दी में की हुई। इस राजवंश के प्रवर्तक हर्षदेव थे।
- बुंदेलखंड को जेजाकाभुक्ति के नाम से भी जाना जाता था।
- प्रमुख यसोवार्मन के काल के दौरान चंदेल की राजधानी महोबा थी।
- कालिंजर उनका महत्वपूर्ण किला था।
- चंदेलों ने 1050 ईसवी में सबसे प्रसिद्ध कंदरिया महादेव मंदिर एवं खजुराहो में अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया। विद्याधर कंदरिया महादेव मंदिर की स्थापना हेतु प्रसिद्ध है।
- अंतिम चंदेल शासक परमल को 1203 ईसवी में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा हराया गया।

मालवा के परमार

- वे अग्निवंशी राजपूत राजवंश का एक भाग थे। वे 9-10$^{वीं}$ शताब्दी में स्थापित किए गए, राष्ट्रकूट के जागीरदार थे।
- उन्होंने धर को अपनी राजधानी बनाया। उनके शासन के दौरान भोज एक महत्वपूर्ण शासक था।
- बाद के परमार शासकों ने उनके शत्रुओं द्वारा कई बार धर को लूटने के बाद मांडू को अपनी राजधानी बनाया।
- महालाकदेव, अंतिम परमार राजा थे, जिन्हें 1305 ईसवी में दिल्ली के अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य-बलों द्वारा हराया एवं मारा गया।

गुजरात के चालुक्य

- चालुक्य राजवंश ने उत्तर-पश्चिम भारत के वर्तमान में गुजरात एवं राजस्थान नामक स्थानों पर, 940 ईसवी एवं c. 1244 ईसवी के बीच शासन किया। उनकी राजधानी अनाहिलावादा (आधुनिक पाटन) में स्थित थी।
- मुलरजा इस राजवंश के प्रवर्तक थे। भीम I के शासन के दौरान, महमूद गजनी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया और उसे लूट लिया।
- दिगम्बर जैनों के लिए मुलवसतिका मंदिर तथा श्वेताम्बर जैनों के लिए मूलनाथ-जिनदेव मंदिर का निर्माण भी मुलरजा ने करवाया था।
- दिलवर मंदिर एवं मोढेरा सूर्य मंदिर का निर्माण भी भीम I के राज्यकाल के दौरान किया गया था।
- रानी-की-वाव का आरम्भ रानी उदयमती द्वारा किया गया था।

त्रिपुरी के कलचुरी

- छेदी के कलचुरी ने, जबलपुर के समीप उनकी राजधानी त्रिपुरी से 7वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान केन्द्रीय भारत के हिस्सों पर शासन किया।
- *लक्ष्मीकर्ण* के शासनकाल के दौरान राज्य अपनी चरम सीमा पर पहुंचा, जिसे कई पडोसी राज्यों के खिलाफ सैन्य अभियानों के बाद चक्रवर्तिन का शीर्षक मिला।
- अमरकंटक में कर्ण मंदिर का निर्माण लक्ष्मीकर्ण (1041 – 1173 ईसवी) द्वारा करवाया गया।

दिल्ली सल्तनत के राजवंश

वंश	राज्य-काल	प्रमुख शासक
मामलुक या गुलाम वंश	1206 - 1290	कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, गयासुद्दीन बलबन
खिलजी वंश	1290 - 1320	अलाउद्दीन खिलजी
तुगलक वंश	1321 - 1413	मुहम्मद बिन तुगलक, फिरोज शाह तुगलक

सैयद वंश	1414 - 1450	ख़िज़्र ख़ान
लोदी वंश	1451 - 1526	इब्राहिम लोदी

गुलाम वंश (1206-1290)

वर्ष	**शासक**	**महत्वपूर्ण तथ्य**
1206 - 1210	कुतुबुद्दीन ऐबक	1) मुहम्मद गोरी का सबसे भरोसेमंद गुलाम 2) 1210 में चौगान (पोलो) खेलते समय मृत्यु हो गई 3) इसे लाख बख़्स की उपाधि दी गई थी 4) इसने दिल्ली में कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद और अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा का निर्माण करवाया 5) इसने सूफी संत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में कुतुब मीनार का भी निर्माण शुरू करवाया
1210 – 1236	इल्तुतमिश	1) तुर्की विजय के वास्तविक समेकनकर्ता 2) इसने मंगोल, चंगेज खां के आक्रमण से दिल्ली सल्तनत की रक्षा की थी 3) इसने टंका और जीतल मुद्रा प्रणाली की शुरूआत की थी 4) इसने इक्ता प्रणाली - सैनिकों और अमीरों के लिए भूमि अनुदान का आयोजन किया 5) इसने चहलगानी प्रणाली को स्थापित किया जिसमें 40 उत्तम सदस्य शामिल थे। 6) इसने कुतुबमीनार के निर्माण को पूरा करवाया।
1236 – 1240	रजिया सुल्तान	1) पहली एवं एकमात्र मुस्लिम महिला जिसने भारत पर शासन किया

byjusexamprep.com

		2) लोकप्रिय शासक होने के बावजूद, वे चहलगानी को नापंसद थी, जो सिंहासन पर एक कठपुतली शासक (उसके इशारों पर नाचने वाला) को बैठाना चाहते थे 3) वे डाकुओं के साथ युद्ध में पराजित हुई और उसकी हत्या कर दी गई
1240-1266	कमजोर शासकों का काल	रज़िया की मृत्यु के बाद, सिंहासन पर कमजोर शासक आए, जिन्हें अमीरों का समर्थन प्राप्त था। बहराम शाह, मसूद शाह और नसिरुद्दीन महमूद बाद में सिंहासन पर बैठे थे।
1266 – 1287	बलबन काल	1) एक मजबूत और केन्द्रीकृत सरकार की स्थापना की गई 2) इसने तुर्की अमीरों के विजेता के रूप में काम किया 3) इसने साम्राज्य की शक्ति को पुन: बहाल करने के लिए चहलगानी की ताकत को तोड़ दिया 4) इसने सेना की मजबूती के लिए सैन्य विभाग- दीवान-ए-अर्ज़ को स्थापित किया 5) इसने कानून और व्यवस्था समस्याओं को बहाल करने के लिए रक्त और लौहनीति (Blood and Iron Policy) को अपनाया 6) इसने सिजदा और पैबोस प्रथा पर जोर दिया 7) इसने जिल-ए-इलाही की उपाधि धारण की
1218 - 1227	**चंगेज खान**	1) ये एक मंगोल शासक था जो स्वयं को आतंक कहे जाने में गर्व महसूस करता था 2) इसने ख़्वारिज़मी साम्राज्य पर आक्रमण किया और संपन्न शहरों को लूट कर बर्बाद कर दिया 3) इसके काल में दिल्ली सल्तनत एकमात्र महत्वपूर्ण इस्लामी राज्य बन गया था 4) इल्तुतमिश ने 1221 में जलालुद्दीन के एक शरणार्थी निवेदन को अस्वीकार कर दिया, जिसे चंगेज खान ने हराया था। चंगेज खान

byjusexamprep.com

		सिंधु नदी को पार नहीं कर पाया, जिसने कमजोर सल्तनत को लुटेरों और लूटपाट से बचाया।

खिलज़ी वंश (1290-1320)

वर्ष	शासक	महत्वपूर्ण तथ्य
1290 – 1296	जलालुद्दीन खिलजी	1) इसने तुर्की अमीरों के एकाधिकार की जांच की और सहिष्णुता की नीति अपनाई
1296 – 1316	अलाउद्दीन खिलजी	1) इसने धर्म को राजनीति से अलग किया और कहा की राजधर्म भाई-भतीजा वाद को नहीं पहचानता **2)** इसने साम्राज्यवादी और संयोजन नीति अपनाई। इसने गुजरात, रणथंबौर, मालवा, मेवाड़ आदि पर कब्जा कर लिया **प्रशासनिक सुधार** 1) चार फ़र्मानों की श्रृंखला द्वारा अलाउद्दीन ने अमीरों के कारण होने वाली समस्याओं से बचने के लिए कुछ कदम उठाए 2) इसने दाग देने - घोड़ों पर चिह्न लगाने और चेहरा प्रणाली सैनिकों के वर्णन की प्रणाली विकसित की 3) बाजार व्यवस्था स्थापित करके, अलाउद्दीन ने सभी वस्तुओं के लिए मूल्य निर्धारित किए 4) इसने कुतुब मीनार के प्रवेशद्वार पर अलाई किला और अलाई दरवाजे का निर्माण करवाया 5) इसने हजार खंभों के महल का भी निर्माण करवाया जिसे हजार सुतुन कहा जाता था 6) अमीर खुसरो, अलाउद्दीन के दरबारी कवि थे।
1316 – 1320	मुबारक खान	
1320	खुसरो खान	गाज़ी मलिक ने एक विद्रोह में खुसरो खान को अपदस्थ कर दिया।

byjusexamprep.com

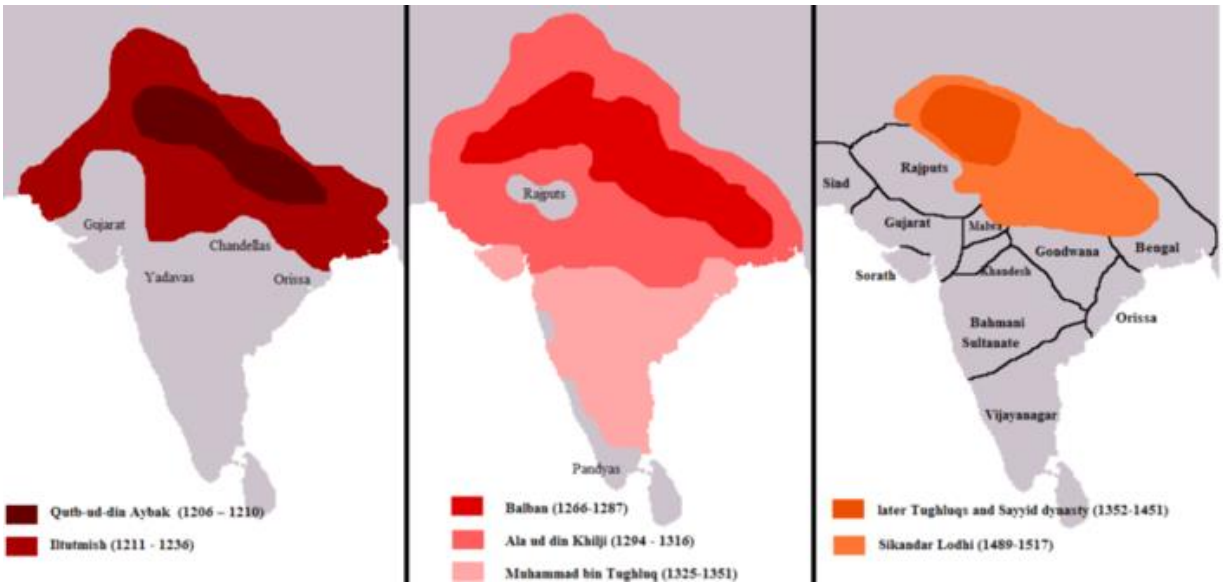

तुगलग वंश (1320-1412)

शासक	समय
गियासुद्दीन तुग़लक	1320-24
मुहम्मद तुग़लक	1324-51
फ़िरोज शाह तुग़लक	1351-88
मोहम्मद खान	1388
गियासुद्दीन तुग़लक शाह II	1388
अबू बकर	1389-90
नसीरुद्दीन मुहम्मद	1390-94
हुमांयू	1394-95
नसीरुद्दीन महमूद	1395-1412

शासक	शासनकाल	महत्वपूर्ण तथ्य
गियासुद्दीन तुग़लक	1320-1325	1. खिलजी वंश के अंतिम शासक खुसरो खान, गजनी मलिक द्वारा मारा गया था, और गजनी मलिक, गियासुद्दीन तुगलक के

byjusexamprep

		नाम पर सिंहासन पर आसीन हुआ। 2. उनकी एक दुर्घटना में मौत हो गई और उनके बेटे जौना (उलूग खान) ने मोहम्मद-बिन-तुगलक के नाम से गद्दी संभाली।
मोहम्मद बिन तुगलग	1325-1351	1. गियासुद्दीन तुगलक के पुत्र राजकुमार जौना ने 1325 में गद्दी संभाली। 2. उन्होंने कई प्रशानिक सुधार के प्रयास किये। उनकी पांच महत्वाकांक्षी परियोजंनाये थी जिसके लिए वह विशेषकर बहस का मुद्दा बन गए। दोआब में कराधान (1326) पूंजी का स्थानांतरण (1327) टोकन मुद्रा का परिचय (1329) प्रस्तावित खुरासन अभियान (1329) करचील अभियान (1330) 3. उनकी पांच परियोजनायें उनके साम्राज्य में चारों ओर विद्रोह का कारण बनी। उनके अंतिम दिन विद्रोहियों से संघर्ष में गुजरे। 1335 - मुदुरई स्वतंत्र हुआ (जलालुद्दीन अहसान शाह) 1336 - विजयनगर के संस्थापाक (हरिहर और बुक्का), वारंगल स्वतंत्र हुआ (कन्हैया) 1341-47 - 1347 में सदा अमीर और बहमाणी की स्थापना का विद्रोह (हसन गंगू) उनका तुर्की के एक गुलाम तघि के खिलाफ सिंध में प्रचार करते समय थट्टा में निधन हो गया।
फ़िरोज शाह तुगलक	1351-1388	1. वह मोहम्मद बिन तुगलक के चचेरे भाई थे। उनकी मौत के बाद बुद्धिजीवियों, धर्मगुरुओं और सभा ने फिरोज शाह को अगला सुल्तान नियुक्त किया। 2. दीवान-ए-खैरात (गरीब और जरूरतमंद लोगों के लिए विभाग) और दीवान-ई-बुंदगन (गुलामों का विभाग) की स्थापना की।

byjusexamprep.com

		4. इक्तादारी प्रणाली को अनुवांशिक बनाना। 5. यमुना से हिसार नगर तक सिचांई के लिए नहर का निर्माण हर। 6. सतलुज से घग्गर तक और घग्गर से फ़िरोज़ाबाद तक। 7. मांडवी और सिरमोर की पहाड़ियों से हरियाणा के हांसी तक। 8. चार नए शहरों, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, जौनपुर और हिसार की स्थापना।
फिरोज शाह तुगलक के बाद	1388-1414	1. फिरोज शाह की मौत के बाद तुगलक वंश बहुत ज्यादा दिनों तक नहीं चला। मालवा (गुजरात) और शारकी (जौनपुर) राज्य सल्तनत से अलग हो गए। 2. तैमूर का आक्रमण: (1398 9-99) में तैमूर, एक तुर्क ने तुगलक वंश के अंतिम शासक मुहम्मद शाह तुगलक के शासनकाल के दौरान 1398 भारत पर आक्रमण किया। उनकी सेना ने निर्दयतापूर्वक दिल्ली को लूट लिया। 3. तैमूर मध्य एशिया लौट गया और पंजाब पर शासन करने के लिए एक प्रत्याक्षी को छोड़ गया इस प्रकार तुगलग वंश का अंत हुआ।

सईद वंश (1414 – 1450)

शासक	**काल**
खिज़र खान	1414-21
मुबारक शाह	1421-33
मुहम्मद शाह	1421-43
अलाउद्दीन आलम शाह	1443-51

byjusexamprep.com

शासक	शासन काल	महत्वपूर्ण तथ्य
खिज़र खान	1414-1421	1. तैमूर द्वारा नामांकित हुआ और दिल्ली पे अधिकार प्राप्त किया और सईद वंश का पहला व दिल्ली का नया सुल्तान बना। 2. उन्होंने दिल्ली और आस पास के जिलों पर शासन किया।
मुबारक शाह	1421-1434	1. मेवातीस, काठेहर और गंगा के दोआब क्षेत्र में उनके सफल अभियान के बाद उन्हें खिज़र का गद्दी मिली। 2. उन्हें उनके दरबारियों ने मार डाला था।
मुहम्मद शाह	1434-1443	1. दरबारियों ने मुहम्मद शाह को गद्दी पर पर बिठाया, लेकिन आपस की लड़ाई के कारण टिक नहीं पाए। 2. वह 30 मील की दूरी के आसपास एक अल्प क्षेत्र पर शासन करने के लिए अधिकृत था और शेष सल्तनत पर उनके दरबारियों का शासन था।
आलम शाह	1443-1451	अंतिम सईद शासक ने बहलोल लोधी का समर्थन किया और गद्दी छोड़ दी। इस प्रकार लोधी वंश की शुरुआत हुई जिसका शासन दिल्ली और इसके आसपास तक सिमित था।

लोदी वंश (1451-1526 AD)

शासक	शासन काल	महत्वपूर्ण तथ्य
बहलोल लोदी	1451-88	1. बहलोल लोधी अफगानी सरदारों में से एक था जिसने तैमूर के आक्रमण बाद खुद को पंजाब में स्थापित किया। 2. उन्होंने लोधी वंश की स्थापना की। उन्होंने सईद वंश के अंतिम शासक से गद्दी लेकर लोधी वंश के शासन को स्थापित किया। 3. वह एक मजबूत और बहादुर शासक था। उन्होंने दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों को जीत कर दिल्ली की गरिमा को बनाये रखने की कोशिश की और 26 वर्षों के लगातार युद्ध के बाद, वह जौनपुर, रेवेल, इटावा, मेवाड़, संभल, ग्वालियर आदि पर विजय प्राप्त किया। 4. वह एक दयालु और उदार शासक था। वह अपने आश्रितों की

byjusexamprep.com

		मदद के लिए लिए हमेश तैयार रहते थे। 5. चूँकि वह खुद एक अशिक्षित थे अतः उन्होंने कला और शिक्षा के विस्तार में मदद की। 1488 में उनकी मौत हो गई।
सिकंदर लोदी	1489-1517	1. सिकंदर लोधी, बहलोल लोधी का पुत्र था जिसने बिहार और पश्चिम बंगाल जीता था। 2. उन्होंने राजधानी को दिल्ली से आगरा स्थानांतरित कर दिया, यह उनके द्वारा स्थापित शहर था। 3. सिकंदर एक कट्टर मुस्लिम था जिसने ज्वालामुखी मंदिर की प्रतिमाये तुड़वा दी और मथुरा के मंदिरो को नष्ट करने का आदेश दिया। 5. उसने कृषि विकास में काफी रूचि दिखाई। उन्होंने 32 गज के खेती योग्य भूमि को मापने के लिए गज-ई-सिकंदरी (सिकंदर गज) का परिचय कराया। 6. वह एक कट्टर सुन्नी और मुस्लिम कट्टरपंथी था। उनमे धार्मिक सहिष्णुता की कमी थी। धर्म के नाम पर, उसने हिंदुओं पर असीमित अत्याचार किया।
इब्राहिम लोदी	1517-26	1. वह लोधी वंश का अंतिम शासक और दिल्ली का आखिरी सुल्तान था। 2. वह सिकंदर लोधी का पुत्र था। 3. अफगान सरदार लोग बहादुर और आजादी से प्यार करने वाले लोग थे, लेकिन अफगान राजशाही के कमजोर होने का कारण भी इनकी पृथकतावादी और व्यक्तिगत सोच थी। इसके अलावा, इब्राहिम लोधी ने सुल्तान के रूप में पूर्ण सत्ता का दावा किया। 4. अंत में पंजाब के राजयपाल दौलत खान लोधी ने बाबर को इब्राहिम लोदी को उखाड़ फेंकने के लिए आमंत्रित किया; बाबर ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोढ़ी को बुरी तरह से हरा दिया। 5. सुल्तान इब्राहिम के अलावा कोई अन्य सुल्तान युद्ध क्षेत्र में मारा नहीं गया था।

byjusexamprep.com

महत्वपूर्ण केंद्रीय विभाग

विभाग	कार्य
दीवान -ई-रिसालत (विदेश मंत्री)	अपील विभाग
दीवान-ई-अरिज	सैन्य विभाग
दीवान-ई-बंदगन	दास विभाग
दीवान-ई-क़ाज़ा-ई-मामालिक	न्याय विभाग
दीवान-ई-इसथियाक	पेंशन विभाग
दीवान-ई-मुस्तखराज	बकाया विभाग
दीवान-ई-खैरात	दान विभाग
दीवान-ई-कोही	कृषि विभाग
दीवान-ई-इंशा	पत्राचार विभाग

महत्वूर्ण केंद्रीय आधिकारिक पद

पद	भूमिका
वज़ीर	राजस्व और वित्त प्रभारी व राज्य के मुख्यमंत्री, अन्य विभाग द्वारा नियंत्रित।
अरीज़-ई-ममलिक	सैन्य विभाग प्रमुख
काज़ी	न्यायिक अधिकारी (मुस्लिम शरीयत कानून आधारित नागरिक क़ानून)
वकील-ई-डार	शाही घराने के नियंत्रक
बारिद-ई-मुमालिक	राज्य समाचार एजेंसी प्रमुख
आमिर-ई-मजलिस	शाही समारोहों, सम्मेलन और त्यौहारों के आधिकारिक कार्यभार।
मजलिस-ई-आम	राज्य के महत्वपूर्ण मामलों पर परामर्श के लिए मैत्री एवं आधिकारिक निकाय।

byjusexamprep.com

दाहिर-ई-मुमालिक	शाही पत्राचार प्रमुख।
सद्र-ई-सुदूर	धार्मिक मामलों और निधि निपटान।
सद्र-ई-जहाँ	धार्मिक और दान निधि अधिकारी।
अमीर-ई-दाद	सार्वजानिक वकील
नायब वज़ीर	उप मंत्री
मुशरिफ-ई-मुमालिक	महालेखागार

मुग़ल साम्राज्य

1526 – 1530 ईसवी	बाबर	पानीपत के प्रथम युद्ध के बाद मुगल साम्राज्य की स्थापना की
1530 – 1540 ईसवी 1555 – 1556 ईसवी	हुमांयु	शेरशाह सूरी द्वारा पराजित
1540 – 1555 ईसवी	सूर साम्राज्य	शेरशाह ने हुमांयु को हराया और 1540-45 ईसवी तक शासन किया
1556 ईसवी	पानीपत की दूसरी लड़ाई	अकबर बनाम हेमू
1556 – 1605 ईसवी	अकबर	दीन-ए-इलाही की स्थापना की, मुगल साम्राज्य का विस्तार किया
1605 – 1627 ईसवी	जहांगीर	कैप्टन विलियम हॉकिन्स और सर थॉमस रो, मुगल दरबार में पधारे
1628 -1658 ईसवी	शाहजंहा	मुगल साम्राज्य एवं कला और स्थापत्य का उत्कृष्ट समय

byjusexamprep.com

1658 – 1707 ईसवी	औरंगजेब	मुगल साम्राज्य के पतन की शुरूआत
1707 – 1857 ईसवी	उत्तरवर्ती मुगलशासक	अंग्रेजों के ताकतवर बनने के साथ ही मुगल साम्राज्य में फूट

बाबर (1526-1530 ईसवी)

- भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर तैमूर के वंशज थे।
- 1517 ईसवी में इब्राहिम लोदी ने सिकन्दर लोदी को पराजित किया।
- दौलत खान लोदी और राणा सांगा के राजदूतों ने बाबर को इब्राहिम लोदी को हटाने के लिए आमंत्रित किया जिसके कारण **बाबर और इब्राहिम लोदी** के बीच **1526 ईसवी में पानीपत का प्रथम युद्ध** लड़ा गया।
- बाबर ने इस युद्ध में एक तुर्की (रुमि) हथियार का प्रयोग किया।
- इस युद्ध में बाबर ने बारूद (गनपाउडर) का भी बहुत अधिक प्रयोग किया, हालांकि भारत में बारूद का ज्ञान बाबर के आने से पूर्व से ही था ।
- **खानवा का युद्ध 1527 ईसवी में बाबर और राणा सांगा** के बीच लड़ा गया था। राणा सांगा की हार के साथ, गंगा के मैदानों में बाबर की स्थिति मजबूत हो गई। उसने युद्ध को ज़िहाद का नाम दिया और अपनी जीत के बाद गाज़ी की उपाधि धारण की।
- बाबर ने तुजुक-ए-बाबरी की रचना की, जो एक प्रसिद्ध सूफ़ी रचना का मसनवी और तुर्की भाषा में अनुवाद था। तुज़ुक-ए-बाबरी का अब्दुर रहीम खानखाना द्वारा बाबरनामा के रूप में फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया गया था।
- इसने दो मस्जिदों एक काबुलीबाग, पानीपत और दूसरी संभल, रोहिलखंड में बनवाईं।

हुमायुं (1530-1540 ईसवी तथा 1555-1556 ईसवी)

- हुमायुं 29 दिसम्बर, 1530 को 23 वर्ष की आयु में मुगल शासक बना।
- सन् 1539 में चौसा के युद्ध में हुमायुं को पहली बार शेरशाह सूरी द्वारा हराया गया था। अगले ही वर्ष, 1540 में शेरशाह ने कन्नौज के युद्ध में हुमायुं को पूरी तरह से पराजित कर दिया और सूर वंश की स्थापना की।
- 15 वर्षों तक निर्वासन में रहने के बाद, हुमायुं ने अंतिम सूर शासक सिकन्दर शाह सूरी को 1555 में सिरहिन्द के युद्ध में पराजित करके अपना साम्राज्य पुन: प्राप्त कर लिया, जिसके बाद वह केवल 6 माह तक ही शासन कर सका।

- सन् 1540 से 1555 तक के समय को मुगलों के आंशिक ग्रहण के काल के रूप में जाना जाता है।
- 24 जनवरी, 1556 को दिल्ली में पुरानाकिला में अपने पुस्तकालय 'शेरमंडल' की सीढ़ियों से दुर्घटनावश गिरने से हुमायुं की मृत्यु हो गई।
- हुमायुं एक विख्यात गणितज्ञ और खगोल विज्ञानी थे। उसने मुगलों के मध्य इंसान-ए-कामिल (निपुण पुरुष) की उपाधि प्राप्त की थी।
- हुमायुं के जीवन परिचय हुमायुं नामा की रचना हुमायुं की बहन गुलबदन बेगम द्वारा की गई थी। इस जीवन परिचय को लिखने के लिए उपयोग की गई भाषा तुर्की और फ़ारसी भाषा का मिश्रित रूप थी।

हुमायुं काल के दौरान स्थापत्य:-

1. पुरानाकिला के निर्माण की नींव हुमायुं द्वारा रखी गई थी लेकिन इसके निर्माण को शेरशाह द्वारा पूर्ण किया गया था।
2. हुमायुं का मक़बरा (दो गुबंदों वाली भारत की प्रथम इमारत) दिल्ली में स्थित है, जिसे हाजी बेगम द्वारा बनवाया गया था।
3. 1533 में हुमायुं ने दिल्ली में दीनपनाह (विश्व पनाहगाह) शहर का निर्माण करवाया।

शेरशाह सूरी (सूर साम्राज्य)

- शेरशाह का वास्तविक नाम फरीद था। उसका परिवार अफगानिस्तान से भारत आया था।
- उसने बिहार के शासक बहार खान लोहानी के पास नौकरी से शुरूआत की, जहां से इसे एक बाघ को केवल एक वार से मारने के कारण बहार खान लोहानी द्वारा शेर खान की उपाधि प्राप्त हुई।
- सन् 1539 में चौसा के युद्ध में, शेर खान ने पहली बार हुमायुं को पराजित किया और शेरशाह की उपाधि धारण की।
- बाद में सन् 1540 में शेरशाह ने कन्नौज के युद्ध में हुमायुं को पूरी तरह से पराजित कर दिया और सूर साम्राज्य की स्थापना की।

स्थापत्य:

1. शेरशाह ने सोहारगांव से अटक (कलकत्ता से अमृतसर) तक ग्रांड ट्रंक रोड़ का निर्माण करवाया था। शेरशाह ने भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय राजमार्ग की अवधारणा प्रस्तुत की।

आज ग्रांड ट्रंक रोड़ को शेरशाह सूरी मार्ग के नाम से जाना जाता है। इसके दिल्ली से अमृतसर तक के भाग को राष्ट्रीय राजमार्ग-1 कहा जाता है।

2. इसने दिल्ली में पुराना किला (इसके निर्माण की शुरुआत हुमायुं द्वारा की गई थी) का निर्माण करवाया और इसने बिहार के सासाराम में अपने मकबरे का निर्माण भी करवाया।
3. इसने दिल्ली में फिरोजशाह कोटला के दरवाजे जिसका नाम खूनी दरवाजा (रक्त से सना हुआ दरवाजा) है, का भी निर्माण करवाया।

<u>अर्थव्यवस्था और प्रशासन:</u>

1) वह चांदी के रुपये (एक रुपये की कीमत 64 दाम के बराबर थी) और सोने के सिक्के (अशरफी) की शुरुआत करने वाला प्रथम शासक था।

2) इसने मानक भार और मापन भी तय किए, बेहतरीन प्रशासन और भूमि राजस्व नीति की शुरुआत की।

3) प्रशासनिक विभाजन:

- इक्ता - हक़िम या अमीन के तहत प्रांत
- सरकार - शिकदार-ए-शिकदारन या मुंसिफ-ए-मुंसिफान के तहत जिले
- परगना - शिकदार या मुंसिफ के अंतर्गत तालुक
- ग्राम - मुक्कदम या आमिल के अंतर्गत गांव

4) इसने स्थानीय अपराधों के लिए स्थानीय मुकद्दम /ज़मीदारों को जिम्मेवार बनाया।

5) हिन्दी के कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने इसके शासनकाल में अपनी पद्मावत को पूरा किया था।

मुग़ल साम्राज्य

अकबर (1556 – 1605 ईसवी)

वर्ष	**महत्व**
1556	अकबर 14 वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठा।
1556	पानीपत का दूसरा युद्ध हेमू और बैरम खान (खान-ए-खानखाना) के मध्य हुआ था। हेमू की युद्ध में पराजय हुई।
1560	अकबर 18 वर्ष की आयु में आत्मनिर्भर हो गया और बैरम खान को अपदस्थ कर दिया
1564	जज़िया कर को समाप्त कर दिया गया

1571	आगरा के समीप फतेहपुर सीकरी की स्थापना की गई
1574	मनसबदारी प्रथा की शुरुआत की गई
1575	इबादत खाना का निर्माण करवाया गया
1576	हल्दीघाटी का युद्ध राणा प्रताप और राजा मान सिंह के नेतृत्व में मुगल सेना के मध्य लड़ा गया
1580	दहशाला बंदोबस्त व्यवस्था की शुरुआत की गई
1582	अकबर द्वारा नए धर्म दीन-ए-इलाही की शुरुआत की गई, जो विभिन्न धर्मों जैसे हिंदु, मुस्लिम, जैन आदि से लिए गए कई मूल्यों का संकलित रूप था। यह धार्मिक रूढिवादिता और कट्टरता को समाप्त करने की ओर एक कदम था। इसने 'सुलह-कुल या सभी के लिए शांति' की नीति को अपनाया।

- अकबर एक **अशिक्षित** व्यक्ति था, लेकिन वह बुद्धिमान पुरुषों का संरक्षक था। उसने अपने दरबार में बुद्धिमानों की एक सभा (नवरत्न) का प्रबंध किया था। इसमें निम्नलिखित व्यक्ति शामिल थे:
- अबुल फज़ल: अकबर के दरबार के इतिहासकार जिन्होंने अकबर की आत्मकथा आइने-अकबरी और अकबर नामा की रचना की थी।
- अबुल फैज़ी: फ़ारसी कवि और अबुल फज़ल के भाई। इन्होंने महाभारत का फारसी में 'रजाम नामा' नाम से और भाष्कराचार्य के गणितीय ग्रंथ लीलावती का फारसी में अनुवाद किया था।
- मियां तानसेन: इनका असली नाम राम थानु पाण्डे था। वह अकबर के दरबारी संगीतज्ञ थे। इन्होंने अकबर के सम्मान में राग, राजदरबारी की रचना की।
- बीरबल: इनका असली नाम महेश दास था। यह अकबर के दरबार के विदूषक थे।
- राजा टोडरमल: राजा टोडरमल अकबर के वित्त या राजस्व मंत्री थे। इन्होंने अकबर की राजस्व व्यवस्था जब्ती और दहशाला व्यवस्था को सूत्रबद्ध किया था। राजा टोडरमल ने भी भागवतपुराण का फारसी में अनुवाद किया था।
- महाराजा मान सिंह: अकबर के सैन्य कमांडर थे।
- भगवानदास: राजा भारमल के पुत्र थे।
- अब्दुर रहीम खानखाना: हिन्दी के कवि थे।
- मुल्ला दो प्याज़ा

BYJU'S EXAM PREP
SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

प्रशासन

भू-राजस्व

- अकबर ने वार्षिक मूल्यांकन प्रणाली की शुरुआत की, जिसमें भूमि का मूल्यांकन कानूनगो अथवा भूमि के पैतृक उत्तराधिकारियों द्वारा किया जाता था और कर का संग्रह करोड़ी द्वारा किया जाता था।
- 1580 में, एक नई प्रणाली दहशाला (पिछले 10 वर्षों के मूल्य) की गणना की जाती थी। भूमि की माप जब्ती प्रणाली द्वारा किया जाता था जो दहशाला प्रणाली का सुधरा हुआ रूप था। इसे टोडरमल प्रणाली भी कहा जाता था।
- बटाई प्रणाली में, उत्पादन को निश्चित अनुपातों में विभाजित किया गया था।
- नस्क प्रणाली में, किसानों के पिछले दस वर्षों के भुगतानों की अनुमानित गणना की जाती थी और साम्राज्य का हिस्सा निश्चित था।
- कृषि योग्य भूमियों के प्रकार
- पोलाज - प्रत्येक वर्ष खेती योग्य भूमि
- परती - बंजर भूमि
- चंचड़ - 2-3 वर्षों के लिए छोड़ी गई भूमि
- बंजर - 2-3 वर्षों से अधिक समय के लिए छोड़ी गई भूमि
- तकावी - किसानों के लिए ऋण
- राजस्व के उद्देश्य से भूमि का विभाजन
- खलिसा - सम्राट के व्ययों को वहन करने के लिए अलग की गई भूमि
- ज़ागीर - अमीरों या मनसबदारों को उनके व्ययों को वहन करने के लिए दी गई भूमि
- इनाम - धार्मिक व्यक्तियों को दी गई भूमि

मनसबदारी प्रणाली: इसकी शुरुआत एक बड़ी सेना के रख-रखाव के लिए की गई थी। अमीरों को रैंक (मनसब) से सम्मानित किया गया। उन्हें जाट (व्यक्तिगत पद) और सवार (घुड़सवार को बनाए रखने की आवश्यकता थी) में विभाजित किया गया था। इसी के साथ, दाग और चेहरा प्रणाली को भी अपनाया गया। मनसबदारों को जागीरें दी गईं जिनका उपयोग वे सैनिकों को वेतन देने के लिए करते थे।

महत्वपूर्ण पद

- वज़ीर/दीवान - राजस्व विभाग का प्रमुख
- सूबेदार - प्रांत का राज्यपाल

SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

- मीर बक्शी - सैन्य प्रमुख जो अमीरों का भी प्रमुख था
- बरीद: खुफिया अधिकारी
- वाक्या-नवीस - संदेश वाहक
- मीर समन - शाही परिवारों और राजशाही कारखानों का अधिकारी
- मुख्य काज़ी - न्याय विभागों का प्रमुख
- मुख्य सदर - धर्मार्थ और धार्मिक चंदों के लिए जिम्मेवार
- दीवान-ए-आम - खुला दरबार
- गुसल खाना - निजी परामर्श कक्ष

अकबर काल का स्थापत्य

- इसने आगरा किला, इलाहबाद किला, हुमायुं का मकबरा और आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी का निर्माण करवाया।
- फतेहपुर सीकरी में, अकबर ने इबादत खाना या प्रार्थना का कक्ष (हॉल ऑफ प्रेयर) का निर्माण करवाया जिसमें वह चयनित धर्मशास्त्रियों और मनीषियों को बुलाता था और उनके साथ वह धार्मिक और अध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करता था।
- 1601 में अकबर ने गुजरात पर अपनी जीत के उपलक्ष्य में फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा बनाया।
- उसने सभी धर्मों के लोगों के लिए इबादत खाना खोला तथा धर्मों पर चर्चा में उदारवादी विचारों को ग्रहण किया। फतेहपुर सीकरी में पंचमहल बौद्ध विहारों की योजना है।

जहांगीर (1605 – 1627)

- जहांगीर 1605 में सिंहासन पर बैठा था। उसने 12 अध्यादेश जारी किए। उसने आगरा के किले में जंजीर-इल-अदल (न्याय की जंजीर) को स्थापित किया और इसे अपने कठोर न्याय प्रशासन के लिए जाना जाता था।
- इसका विवाह 1611 में एक अफगान विधवा मेहरुनिस्सा से हुआ और जिसे इसने बाद में नूर महल (महल का प्रकाश), नूरजहां (विश्व का प्रकाश) और पदशाह बेगम की उपाधि दी।
- 1606 में जहांगीर ने पांचवे सिक्ख गुरु, गुरु अर्जुन देव को मरवा दिया, क्योंकि उन्होंने जहांगीर के पुत्र खुसरों की उसके खिलाफ विद्रोह करने में सहायता की थी।
- 1609 में, जहांगीर इंग्लैण्ड के राजा जेम्स I के एक दूत विलियम हॉकिन्स से मिला, जो व्यापार में रियायत प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत आया था।

- 1615 में, सर थॉमस रो जहांगीर के दरबार में इग्लैंड के जेम्स I के प्रथम राजदूत के रूप में पहुंचे। उसके प्रयासों के परिणामस्वरूप, सूरत, गुजरात में प्रथम अंग्रेजी कारखाना स्थापित किया गया।
- जहांगीर के काल को मुगल चित्रकला का स्वर्णकाल माना जाता है। जहांगीर स्वयं भी एक चित्रकार था। उस्ताद मंसूर, अबुल हसन और बिशन दास जहांगीर के दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार थे।
- जहांगीर ने अपनी आत्मकथा तुज़ुक-ए-जहाँगीरी फारसी भाषा में लिखी थी।
- जहांगीर की मृत्यु वर्ष 1627 में हुई थी और इसे लाहौर में शाहदरा में दफनाया गया था।

स्थापत्य

- जहांगीर ने श्रीनगर में शालीमार और निशांत बाग का निर्माण करवाया था।
- उसने सिकन्दरा में अकबर के मकबरे के निर्माण को पूर्ण करवाया था।
- जहांगीर ने लाल पत्थर के स्थान पर संगमरमर के व्यापक प्रयोग को शुरु किया और अलकंरण कार्य के लिए पित्रदुरा का प्रयोग किया। नूरजहां ने आगरा में एतमाद्-उद-दौला/मिर्जा गियास बेग के संगमरमर के मकबरे का निर्माण करवाया।
- इसने लाहौर में मोती मस्जिद और शाहदरा में स्वयं के मकबरे का निर्माण करवाया था।

शाहजहां (1628-1658 ईसवी)

- शाहजहां का जन्म 5 जनवरी, 1592 को लाहौर में हुआ था। इनकी माता का नाम जगत गोसाईं था और इनका बचपन का नाम खुर्रम था। यह 1628 में सिंहासन पर बैठे थे।
- इन्होंने नूरजहां के भाई आसफ खान की पुत्री अरजूमंद बेनू बेगम से विवाह किया। जिसे बाद में मुमताज़ महल का नाम दिया गया जिसका अर्थ महल की प्रिय था।
- शाहजहां ने 1631-32 में हुगली में पुर्तगालियों की बस्तियों को तबाह कर दिया।
- लाल किले का दरवाजा लाहौर दरवाजा है। लाहौर दरवाजे पर ही भारत के प्रधानमंत्री राष्ट्रीय झण्डे 'तिरंगे' को फहराते हैं और स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र को संबोधित करते हैं।
- 1656 में शाहजहां ने दिल्ली में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था। यह भारत में सबसे बड़ी मस्जिद है। भारत में पहली मस्जिद का निर्माण 644 ईसवी में केरल (चेरेमन पल्ली) में कोडुनगल्लूर में मलिक इब्न दीनार द्वारा किया गया था।
- शाहजहां के काल को **मुगल साम्राज्य का स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- पुर्तगालियों ने शाहजहां के शासनकाल में भारत में यूरोपीय चित्रकारी को पेश किया था।

- 1658 में शाहजहां को उसके पुत्र औरंगजेब द्वारा कैद कर लिया गया था और जहां आठ वर्षों बाद 1666 में उनकी मृत्यु हो गई। उसकी पुत्री जहां आरा को भी उसके साथ आगरा के किले में कैद रखा गया था।
- शाहजहां का पुत्र दाराशिकोह एक प्रसिद्ध विद्वान था। उसने भगवत गीता और साठ उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया था। उसने 'मुज्म-अल-बेहरेन (महासागरों का संगम) नाम से एक पुस्तक भी लिखी थी। उसने अथर्ववेद का भी फारसी भाषा में अनुवाद किया था।
- शाहजहां एक प्रसिद्ध गीतकार था, जो हिन्दी में लिखता था। प्रसिद्ध मयूर सिंहासन को शाहजहां ने बनवाया था। इसे 1739 में नादिर शाह (फारसी आक्रमणकारी) के भारत आक्रमण के दौरान छीन लिया गया था। अब इसे लंदन टॉवर अजायबघर (संग्रहालय), ब्रिटेन में रखा गया है।
- फ्रांसिसी यात्री बर्नीयर और टैवेरनियर, इटली के यात्री निकोली मानुसी, पीटर मुन्डी ने शाहजहां के काल में भारत की यात्रा की थी।

स्थापत्य

- शाहजहां काल को मुगल वास्तुकला का स्वर्ण काल माना जाता है और शाहजहां को वास्तुकारों का राजकुमार कहा जाता है।
- 1631 में, उसने अपनी बेगम की याद में ताजमहल के निर्माण का कार्य शुरु करवाया और इसका कार्य 1653 में पूरा किया गया था। इसके वास्तुकार एक तुर्की/फारसी उस्ताद ईज़ा थे। ब्रिटिश प्रशासक फर्गूसन ने इसे 'अ लव इन मार्बल' कहा था।
- 1638 में शाहजहां ने दिल्ली में अपनी नई राजधानी शाहजहांनाबाद का निर्माण करवाया और आगरा से राजधानी को यहां स्थानांतरित किया। इन्होंने तख़्त-ए-तऊस (मयूर सिंहासन) का भी निर्माण करवाया।
- 1639 में, उसने अकबर द्वारा बनाए गए आगरा के किले के मॉडल के आधार पर दिल्ली में लाल किले का निर्माण शुरु किया। दीवाने-आम, दीवाने-खास और मोती मस्जिद लाल किले के अंदर स्थित है। आगरा की मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहां द्वारा करवाया गया था।

औरंगजेब (1658 – 1707 ईसवी)

- औरंगजेब ने अपने पिता को कैद कर लिया और 1658 में स्वयं को पादशाह घोषित कर दिया। लेकिन उसका वास्तविक राज्याभिषेक 1659 में किया गया था। उसने दारा को

हराया और 'आलमगीर' की उपाधि से स्वयं को सम्राट घोषित किया। यह अंतिम महान मुगल शासक था जिसके बाद विघटन की शुरुआत हो गई थी।

- औरंगजेब को उसके सादे जीवन के लिए 'जिंदा पीर' या जीवित संत के रूप में जाना जाता था।
- वह एक निष्ठावान और कट्टर मुसलमान था जिसने राज दरबार में गाने और नाचने पर प्रतिबंध लगाया था। इसने जज्या तथा तीर्थयात्री कर को पुन: शुरू किया था।
- 1675 में, इसने नौवें गुरू, गुरू तेग बहादुर को इस्लाम को स्वीकार न करने की उनकी अनिच्छा के कारण मरवा दिया था। सिक्खों के अंतिम गुरु, गुरु गोविंद सिंह ने औरंगजेब के अत्याचारों के खिलाफ लड़ने के लिए खालसा के तहत अपने अनुयायियों को संगठित किया। इनकी हत्या 1708 में कर दी गई थी।
- औरंगजेब के बेटे ने 1679 ईस्वी में अपनी मां रबिया-दुर्रानी की याद में बीबी का मकबरा बनाया।
- लाल किले में औरंगजेब द्वारा निर्मित एकमात्र इमारत मोती मस्जिद है। इसने लाहौर में बादशाही मस्जिद का भी निर्माण करवाया था।

उत्तरवर्ती मुगल शासक

वर्ष	**शासक**	**महत्व**
1707 – 12	बहादुर शाह प्रथम	इसका वास्तविक नाम - मुअज़्ज़म था
1712 – 13	जहांदार शाह	ज़ुल्फिकार खान की सहायता से सिंहासन हासिल किया
1713 – 19	फर्रुख सियार	सैय्यद बंधुओं ने सिंहासन को हासिल करने में इसकी सहायता की
1719 – 48	मुहम्मद शाह	नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया। कमजोर उत्तराधिकारी
1748 – 54	अहमद शाह	अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया। मुगलों ने पंजाब और मुल्तान सौंप दिया।
1754 – 59	आलमगिर द्वितीय	अहमद शाह अब्दाली द्वारा दिल्ली पर कब्जा कर लिया गया और जिसे बाद में लूटा गया।

byjusexam

1759 – 06	शाह आलम द्वितीय	दिल्ली के बाहर रहा।
1806 – 37	अकबर द्वितीय	ईस्ट इंडिया कंपनी का वेतनभोगी, राजा राममोहन राय को राजा की उपाधि दी
1837 – 57	बहादुर शाह द्वितीय	इसके नाम मात्र के नेतृत्व में 1857 का विद्रोह हुआ। इसे बर्मा भेज दिया गया।

अंग्रेजो का आगमन

1600 में महारानी एलिजाबेथ द्वारा दिए गए एक चार्टर के अंतर्गत अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का 1599 में गठन किया गया था। जहांगीर ने **कप्तान विलियम हॉकिन्स** को एक फरमान दिया जिसमें उन्होंने अंग्रेजों को सूरत (1613) में एक कारखाना खड़ा करने के लिए अनुमति दे दी।

- 1615 में, **सर थॉमस रो,** शासक जहांगीर से मुगल साम्राज्य के सभी भागों में व्यापार और कारखाना स्थापित करने के लिए एक शाही फरमान प्राप्त करने में सफल हो गए।
- 1690 में, **जैब चर्नोक** द्वारा सुतानाती में एक कारखाना स्थापित किया गया था। 1698 में, **सुतानाती, कालीकाता** और **गोविंदपुर** के तीन गांवों की जमींदारी के अधिग्रहण के बाद, कलकत्ता शहर की स्थापना की गई थी। फोर्ट विलियम 1700 में स्थापित किया गया था।
- 1717 में, जॉन सुर्मन ने फर्रुखसियार से एक फरमान प्राप्त किया, जिससे कंपनीओ को बड़ी रियायतें दी गयीं। इस फरमान को कंपनी का मैग्ना कार्टा बुलाया गया है।
- **प्लासी की लड़ाई** (1757) में अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला, बंगाल के नवाब, को पराजित किया।
- **बक्सर की लड़ाई** (1764) में कप्तान मुनरो ने मीर कासिम (बंगाल), शुजाउद्दौला (अवध) और शाह आलम द्वितीय (मुगल) के संयुक्त बलों को पराजित किया।

1857 की क्रांति : कारण एवं नेता

क्रांति की प्रकृति

- 1857 की क्रांति की शुरुआत सिपाही विद्रोह से हुई थी लेकिन अंततः इसने लोगों को भी जोड़ लिया।
- वी.डी. सावरकर ने 1857 की क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी थी।
- डॉ. एस. एन. सेन ने इसका वर्णन "ऐसी लड़ाई जो धर्म के लिए शुरु हुई थी लेकिन स्वतंत्रता के युद्ध पर जाकर समाप्त हुई" के रूप में किया है।

- डॉ. आर. सी. मजूमदार ने इसे न तो प्रथम, न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता का युद्ध माना है।
- कुछ ब्रिटिश इतिहासकारों के अनुसार, यह मात्र एक किसान सिपाही बगावत था।

क्रांति के महत्वपूर्ण तथ्य

- मेरठ घटना - 19वीं बैरकपुर नेटिव इन्फ्रैंटरी ने नई शामिल की गई एनफील्ड राइफल उपयोग करने से मना कर दिया, बगावत फरवरी 1857 में फैल गयी, जोकि मार्च 1857 में भंग हो गयी।
- 34वीं नेटिव इन्फैंटरी के एक युवा सिपाही ने बैरकपुर में अपनी यूनिट के सार्जेन्ट मेजर पर गोली चला दी।
- 7वीं अवध रेजीमेंट को भी भंग कर दिया गया।
- मेरठ में 10 मई को विद्रोह हो गया, विद्रोहियों ने अपने बंदी साथियों को आजाद किया, उनके अधिकारियों को मार दिया और सूर्यास्त के बाद दिल्ली कूच कर गए।
- दिल्ली - महान क्रांति का केन्द्र

क्रांति के नेता :

- **दिल्ली** में क्रांति के प्रतीकात्मक नेता मुगल शासक बहादुरशाह जफ़र थे, लेकिन वास्तविक शक्ति सेनापति बख्त खां के हाथों में थी।
- **कानपुर** में नाना साहेब, तात्या टोपे, अजिमुल्लाह खान के नेतृत्व में विद्रोह हुआ। सर ह्युग व्हीलर स्टेशन कंनाडर थे, इन्होंने समर्पण किया। नाना साहेब ने खुद को पेशवा और बहादुर शाह को भारत का सम्राट घोषित किया।
- **लखनऊ** में बेगम हजरत महल ने मोर्चा संभाला और अपने पुत्र बिरजिस कादिर को नबाव घोषित कर दिया। अंग्रेज नागरिक हेनरी लारेंस की हत्या कर दी गई। शेष यूरोपीय नागरिकों को नए कमांडर-इन-चीफ़ सर कोलिन कैम्पबेल ने सुरक्षित निकाला।
- **बरेली** में खान बहादुर, **बिहार** में कुंवर सिंह, **जगदीशपुर** के जमींदार और **फैजाबाद** के मौलवी अहमदुल्लाह ने अपने क्षेत्रों में क्रांति का नेतृत्व किया।
- **रानी लक्ष्मीबाई,** जोकि क्रांति की सबसे असाधारण नेता थीं, को गवर्नर लॉर्ड डलहौडी के व्यगपत सिद्धांत के कारण झांसी से बेदखल कर दिया गया था, क्योंकि जनरल ने उनके दत्तक पुत्र को सिंहासन का उत्तराधिकारी स्वीकारने से मना कर दिया था।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय (1885)

- ब्रिटिश सरकार से सेवानिवृत्त सिविल सेवक एलन ऑक्टेवियन ह्यूम ने अखिल भारतीय संगठन बनाने के लिए पहल की।
- परिणामस्वरुप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई और इसका पहला सत्र 1885 में बॉम्बे में आयोजित किया गया था।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का अध्ययन तीन महत्वपूर्ण चरणों में किया जा सकता हैः
  - नरमपंथी राष्ट्रवाद चरण (1885-1905) जब कांग्रेस ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार रही।
  - वर्ष 1906 - 1916 स्वदेशी आंदोलन, सैन्य राष्ट्रवाद का उदय और होम रूल आंदोलन का गवाह रहा। ब्रिटिशों की दमनकारी नीतियों ने कांग्रेस के भीतर बिपिन चंद्र पाल, बाल गंगाधर तिलक और लाला लजपत राय (लाल, बाल, पाल) समेत अरबिंदो घोष जैसे चरमपंथियों को जन्म दिया।
  - 1917 से 1947 की अवधि को गांधीवादी काल के तौर पर जाना जाता है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण सत्र

वर्ष	स्थान	अध्यक्ष
1885	बाम्बे	डब्ल्यू. सी. बनर्जी
1886	कलकत्ता	दादाभाई नरौजी
1893	लाहौर	"
1906	कलकत्ता	"
1887	मद्रास	बदरूद्दीन तैय्यबजी (प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष)
1888	इलाहाबाद	जार्ज यूल (प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष)
1889	बाम्बे	सर विलियम वेडरबर्न
1890	कलकत्ता	सर फिरोज एस. मेहता
1895, 1902	पूना, अहमदाबाद	एस. एन. बनर्जी

1905	बनारस	जी. के. गोखले
1907, 1908	सूरत, मद्रास	रासबिहारी घोष
1909	लाहौर	एम. एम. मालवीय
1916	लखनऊ	ए. सी. मजुमदार (कांग्रेस का पुनर्मिलन (रि-यूनियन))
1917	कलकत्ता	एनी बेसेंट (प्रथम महिला अध्यक्ष)
1919	अमृतसर	मोतीलाल नेहरू
1920	कलकत्ता (विशेष सत्र)	लाला लाजपत राय
1921, 1922	अहमदाबाद, गया	सी. आर. दास
1923	दिल्ली (विशेष सत्र)	अब्दुल कलाम आजाद (युवा अध्यक्ष)
1924	बेलगांव	एम. के. गाँधी
1925	कानपुर	सरीजनी नायडू (प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष)
1928	कलकत्ता	मोतीलाल नेहरु (प्रथम अखिल भारतीय युवा कांग्रेस का गठन)
1929	लाहौर	जे. एल. नेहरु (पूर्ण स्वराज संकल्प पारित किया गया)
1931	कराची	वल्लभभाई पटेल (यहां, मौलिक अधिकारों और राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम पर संकल्प पारित किया गया)
1932, 1933	दिल्ली, कलकत्ता	(सत्र प्रतिबंधित)
1934	बाम्बे	राजेन्द्र प्रसाद
1936	लखनऊ	जे. एल. नेहरु
1937	फैजपूर	जे. एल. नेहरु (गाँव में प्रथम सत्र)
1938	हरिपूरा	एस. सी. बोस (जे.एल. नेहरू के अधीन एक राष्ट्रीय योजनाबद्ध व्यवस्था की गई)।

byjusexamprep.com

1939	त्रिपुरी	एस.सी.बॉस फिर से निर्वाचित हुए लेकिन गांधी जी के विरोध के कारण उन्हें इस्तीफा देना पड़ा (गांधीजी ने डॉ. पट्टाभी सीतारामय्या का समर्थन किया)। राजेंद्र प्रसाद को उनकी जगह नियुक्त किया गया।
1940	रामगढ़	अब्दुल कलाम आजाद
1946	मेरठ	आचार्य जे. बी. कृपलानी
1948	जयपुर	डॉ. पट्टाभी सीतारामय्या

नरमपंथी राष्ट्रवाद

राष्ट्रीय आंदोलन के पहले चरण के दौरान अग्रणी व्यक्तित्व : ए.ओ. ह्यूम, डब्ल्यू. सी. बनर्जी, सुरेंद्र नाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, फिरोज शाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले, पंडित मदन मोहन मालवीय, बदरुद्दीन तैय्यबजी, जस्टिस रनाडे और जी. सुब्रमण्य अय्यर थे।

- सुरेन्द्रनाथ बनर्जी : को भारतीय बुर्क कहा जाता था। उन्होंने बंगाल विभाजन का दृढ़ता से विरोध किया। उन्होंने राजनीतिक सुधारों के लिए भारतीय संघ (1876) की स्थापना की। उन्होंने इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस (1883) का संयोजन किया था जिसका विलय सन् 1886 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ किया गया।
- **जी. सुब्रमण्य अय्यर** ने मद्रास महाजन सभा के माध्यम से राष्ट्रवाद का प्रचार किया। उन्होंने हिंदू और स्वदेशीमित्रन की भी स्थापना की।
- **दादाभाई नरौजी** को भारत के ग्रांड ओल्ड मैन के नाम से जाना जाता था। उन्हें इंग्लैंड में भारत के अनौपचारिक राजदूत के तौर पर स्वीकृत किया जाता है। वह ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य बनने वाले पहले भारतीय थे।
- **गोपाल कृष्ण गोखले** गांधी के राजनीतिक गुरु माने जाते थे। उन्होंने **1905** में **सर्वेंट ऑफ इंडिया सोसाईटी** की स्थापना की जिसमें भारतीय नागरिकों को देश के लिए कुर्बान होने का प्रशिक्षण दिया जाता था।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1905-1916)

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में 1905 की अवधि को उग्रवाद के युग के रूप में जाना जाता था।

- चरमपंथी या आक्रामक राष्ट्रवादियों का मानना था कि सफलता को लड़कर हासिल किया जा सकता है।
- महत्वपूर्ण चरमपंथी नेता लाला लाजपत रॉय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल और अरबिंदो घोष थे।

चरमपंथियों के नेता

- चरमपंथियों का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत रॉय, बिपिनचन्द्र पाल, और अरबिंदो घोष ने किया।
- बाल गंगाधर तिलक को भारत में ब्रिटिश विरोधी आंदोलन के लोकप्रिय नेता एवं वास्तविक संस्थापक के तौर पर जाना जाता है। उन्हें 'लोकमान्य' के रूप में भी जाना जाता था। उन्होंने मराठा और केसरी उपाधि लौटाकर अंग्रेजों का विरोध किया। उन्हें उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए ब्रिटिश द्वारा दो बार जेल भेजा गया और उन्हें सन् 1908 में छह साल तक मंडोली निर्वासित कर दिया गया। उन्होंने पूना में 1916 में होम रूल लीग की स्थापना की और उन्होंने घोषित किया कि "स्वराज मेरा जन्म सिद्ध-अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।
- लाला लाजपत रॉय 'पंजाब के शेर' के नाम से जाने जाते हैं। स्वदेशी आंदोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 1916 में अमेरिका में भारतीय होम रुल लीग की स्थापना की। राजद्रोह के आधार पर उन्हें मंडालया भेज दिया गया। साइमन कमीशन के खिलाफ जुलूस का नेतृत्व करते हुए वे गंभीर रुप से घायल हो गए और 17 नवंबर, 1928 को उनका निधन हो गया।
- बिपिन चंद्र पाल ने अपना करियर उदारवादी के रूप में शुरू किया और आगे जाकर चरमपंथी बन गए।
- अरबिंदो घोष एक अन्य चरमपंथी नेता थे और उन्होंने सक्रिय रूप से स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया।
- वे कैद में भी थे। रिहाई के बाद वे पोंडीचेरी की फ्रेंच बस्तियों में जाकर बस गए और आध्यात्मिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया।

बंगाल का विभाजन (1905)

- बंगाल विभाजन की घोषणा कर्जन ने की।
- विभाजन का कारण प्रशासन में सुधार करना दिया गया।

- लेकिन वास्तविक उद्देश्य 'फूट डालो और शासन करने' की नीति थी। मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य बनाने के आदेश पर विभाजन किया गया था ताकि देश में सांप्रदायिकता रुपी जहर को घोला जा सके।

स्वदेशी आंदोलन

- स्वदेशी आंदोलन ने सरकारी सेवा, अदालतों, स्कूलों और कॉलेजों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, राष्ट्रीय स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देने जैसे कार्यक्रमों को शामिल करके किया।
- यह राजनीतिक और आर्थिक अर्थात् दोनों तरह का आंदोलन था।
- बंगाल में जमीदारों ने भी आंदोलन का समर्थन किया।
- महिलाओं और छात्रों पर रोक लगाई गई। छात्रों ने विदेशी कागज से बनी पुस्तकों का उपयोग करने से इनकार कर दिया।
- बाल गंगाधर तिलक ने बहिष्कार के महत्व को समझा और भारत में संपूर्ण ब्रिटिश प्रशासनिक मशीनरी को विघटित करने के लिए इसका इस्तेमाल अस्त्र के तौर पर किया।
- स्वदेशी उद्योगों की स्थापना में बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसके परिणामस्वरुप कपड़ा मिलों, बैंकों, होजरी, टेनेरीज, रासायनिक कार्यों और बीमा कंपनियां, स्वदेशी स्टोर खोले गए।
- इसने अंग्रेजों को बंगाल का विभाजन वापस लेने पर मजबूर कर दिया और 1911 में विभाजन को वापस ले लिया गया।

हिंद स्वराज

- जब बंगाल विभाजन का आंदोलन अपने चरम पर था तब कांग्रेस का वार्षिक सत्र 1906 में दादाभाई नरौजी की अध्यक्षता में कलकत्ता में आयोजित किया गया था।
- यह सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण था क्योंकि इसमें नरमपंथियों और चरमपंथियों के बीच सुलह हुई थी।
- कांग्रेस ने बंगाल के विभाजन की निंदा की। दादाभाई नौरोजी के शब्दों में यह इंग्लैंड की सबसे बड़ी गलती थी।
- शिक्षा का प्रचार कांग्रेस के उद्देश्य के रूप में घोषित किया गया।
- स्वदेशी और बॉयकॉट आंदोलन को कांग्रेस ने पूर्ण समर्थन दिया। पहली बार बॉयकॉट को एक राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के लिए अधिकृत किया गया।

मुस्लिम लीग का निर्माण (1906)

- दिसंबर, 1906 में ढ़ाका में मुहम्मदन शैक्षिक सम्मेलन के दौरान नवाब सलीम उल्ला खान ने मुस्लिम हितों की देखभाल के लिए केन्द्रीय मुहम्मदन एसोसिएशन की स्थापना करने का विचार सामने रखा।
- तदनुसार, 30 दिसंबर, 1906 को अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। एक और विशिष्ट व्यक्ति अगा खान को इसका अध्यक्ष चुना गया।

सूरत सत्र (1907)

- सन् 1907 के सूरत सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दो समूहों चरमपंथी और उदारवादी में विभाजित हो गई ।
- चरमपंथियों का नेतृत्व बाल, पाल, लाल ने किया जबकि जी. के. गोखले ने उदारवादियों का नेतृत्व किया।
- निर्वाचित अध्यक्ष रास बिहारी घोष पर विवाद बढ़ गया क्योंकि चरमपंथियों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया।
- चरमपंथी लाला लाजपत राय को चुनना चाहते थे।
- इसके बाद सरकार ने उनके समाचार पत्रों को दमन करने और उनके नेताओं को गिरफ्तार करके चरमपंथियों पर बड़े पैमाने पर हमला किया।

मोर्ले-मिंटो सुधार (1909)

- 1909 का परिषद अधिनियम 1892 के सुधारों का विस्तार था जिसे तत्कालीन सचिव (लॉर्ड मॉर्ले) और तत्कालीन वायसरॉय (लॉर्ड मिंटो) के नाम के बाद भी मॉर्ले-मिंटो सुधार के नाम से जाना जाता था।
- इसने विधान सभा के सदस्यों को सोलह से बढ़ाकर साठ तक कर दिया।
- कुछ गैर-निर्वाचित सदस्यों को भी जोड़ा गया।
- यद्यपि, विधान परिषद के सदस्यों में वृद्धि की गई। उनके पास वास्तविक शक्तियां नहीं थीं। वे मुख्य रूप से सलाहकार थे।
- वे किसी भी बिल को पारित होने से रोक नहीं सकते थे और न ही उनकी बजट के ऊपर कोई पकड़ थी।
- अंग्रेजों ने भारतीय राजनीति में मुस्लिमों के लिए अलग मतदाताओं का आरंभ करके सांप्रदायिकता का बीज बोने की एक बहुत ही सोची समझी साजिश की।

- इसका तात्पर्य यह था कि मुसलमानों के वर्चस्व वाली एसेम्बली में केवल मुस्लिम उम्मीदवार ही चुने जा सकते हैं।
- हिंदु केवल हिंदुओं को वोट दे सकते थे और मुसलमान केवल मुसलमानों के लिए वोट कर सकते थे।
- 'फूट डालो और शासन करो' की अंग्रेजों की नीति अर्थात् साम्प्रदायिक मतदाता सूची के खिलाफ अनेक नेताओं ने विरोध किया।

बंगाल विभाजन का निरासन

- क्रांतिकारी आतंकवाद के खतरे को रोकने के लिए 1911 में बंगाल के विभाजन को रद्द करने का निर्णय लिया गया।
- मुस्लिम राजनीतिक अभिजात वर्ग के लिए बंगाल विभाजन का लोप आघात के रूप में सामने आया।
- मुसलमानों को तर करने के लिए राजधानी को दिल्ली स्थानांतरित करने का भी निर्णय लिया गया। यद्यपि, यह मुस्लिमों की प्रतिष्ठा से जुड़ा था लेकिन मुस्लिम खुश नहीं थे।
- बिहार और उड़ीसा को बंगाल से अलग कर दिया गया और असम को एक अलग प्रांत बना दिया गया।

गदर पार्टी (1913)

- लाला हरदयाल, तारकनाथ दास तथा सोहन सिंह बखना द्वारा निर्मित।
- गदर नाम साप्ताहिक पेपर से लिया गया था जो 1 नवंबर, 1913 को 1857 के विद्रोह का स्मरणोत्सव मनाने के लिए आरंभ किया गया था।
- इसका मुख्यालय सेन फ्रांसिस्को में था।
- प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ ने गदर पार्टी को सरकार से भारत को मुक्त कराने का एक मौका दिया जो उनके कारण के प्रति उदासीन था।
- उन्होंने बंगाल क्रांतिकारियों के सहयोग से एक समन्वित विद्रोह के लिए हजारों की संख्या में भारत लौटना शुरू कर दिया। विश्वासघात के कारण आखिरी क्षण में उनकी योजना विफल हो गई।

कोमागता मारू घटना

- इस घटना का महत्व इस तथ्य में निहित है कि उसने पंजाब में विद्रोहात्मक स्थिति पैदा की।
- कोमागता मारू एक जहाज का नाम था जो मुख्य रुप से सिंगापुर से वैंकूवर तक प्रवासी सिक्ख और पंजाबी मुस्लिम-प्रवासियों को ले जा रहा था।
- दो महीने की बेकार और अनिश्चितता के बाद वे कनाडा के अधिकारियों के सहयोग से वापस आ गए।
- आमतौर पर यह माना जाता था कि कैनेडियन अधिकारी ब्रिटिश सरकार से प्रभावित थे।
- जहाज ने अंततः सितंबर, 1914 में कलकत्ता में अपना लंगर डाला लेकिन कैदियों ने पंजाब जाने वाली ट्रेन पर जाने से इनकार कर दिया।
- नजदीकी कलकत्ता के पास पुलिस के साथ जाने में 22 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।
- इससे प्रभावित होकर और युद्ध छिड़ने के साथ ही गदर नेताओं ने भारत में ब्रिटिश शासन पर हिंसक हमले करने का निर्णय लिया।
- इस प्रकार, पंजाब में एक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान राष्ट्रीय आंदोलन

- प्रथम विश्व युद्ध सन् 1914 में आरंभ हुआ।
- यह युद्ध औपनिवेशिक एकाधिकार पाने के लिए यूरोपीय राष्ट्रों के बीच हुआ था। युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार ने अपने संकट के समय भारतीय नेताओं से सहयोग के लिए अपील की।
- भारतीय नेताओं ने सहमति व्यक्त की लेकिन उन्होंने अपने कुछ नियम और शर्तें अंग्रेजो के समक्ष रखे की युद्ध समाप्त होने के बाद ब्रिटिश सरकार भारतीय लोगों को संवैधानिक (विधायी और प्रशासनिक) शक्तियां प्रदान करेगी।
- दुर्भाग्य से प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा उठाए गए कदमों ने भारतीय लोगों के बीच अशांति पैदा कर दी। इसका मुख्य कारण यह था कि प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार ने बड़ी मात्रा में ऋण लिया था जो उन्हें वापस करना था।
- उन्होंने भूमि के किराए अर्थात् लगान में वृद्धि की। उन्होंने ब्रिटिश सेना में जबरदस्ती भारतीयों की भर्ती की।
- उन्होंने आवश्यक वस्तुओं की कीमत में वृद्धि कर दी और निजी और व्यावसायिक आय पर भी कर लगाए।
- परिणामस्वरूप, उन्हें भारतीय समाज से विरोध का सामना करना पड़ा।

- चंपारण, बारडोली, खेड़ा और अहमदाबाद के किसानों और कर्मचारियों ने ब्रिटिश सरकार की शोषक नीतियों के खिलाफ सक्रिय रूप से विरोध प्रदर्शन किया।
- लाखों छात्रों ने स्कूल और कॉलेज छोड़ दिए। सैकड़ों वकीलों ने अपना अभ्यास छोड़ दिया। इस आंदोलन में महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी सहभागिता गांधी के उदय के साथ ओर भी व्यापक हो गई।
- विदेशी कपड़े का बहिष्कार एक व्यापक आंदोलन बन गया जिसमें हजारों विदेशी कपड़ों को जलाकर विरोध प्रदर्शन किया और इसकी चिंगारी संपूर्ण भारत के नीले गगन में देखने को मिली।

लखनऊ सत्र (1916)

- सन् 1916 में कांग्रेस का 31वां सत्र लखनऊ में आयोजित किया गया।
- इसकी अध्यक्षता अंबिका चरन मजूमदार ने की जो कि एक प्रसिद्ध और कांग्रेस के उदय के बाद से ही सक्रिय रूप से इससे जुड़ी हुईं थीं।

होम रुल लीग आंदोलन 1916

- प्रथम विश्व युद्ध की प्रतिक्रिया स्वरुप भारतीयों द्वारा होम रुल आंदोलन किया गया।
- यह आयरिश होम रूल लीग की तर्ज पर आयोजित किया गया जो आक्रामक राजनीति की एक नई प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता था।
- आयरिश थियोसोफिस्ट एनी बेसेंट ने आयरिश होम रूल लीग की तर्ज पर होम रूल आंदोलन करने का फैसला किया।
- तिलक 1914 में अपनी रिहाई के बाद नेतृत्व ग्रहण करने के लिए तैयार थे और उन्होंने अपनी वफादारी के लिए सरकार और नरमपंथियों को आश्वस्त किया कि वह आयरिश गृह शासकों की तरह प्रशासन में सुधार करेंगे तथा वे सरकार का विनाश नहीं करना चाहते।
- सन् 1915 के आरंभ में एनी बेसेंट ने श्वेत कालोनियों की तर्ज पर युद्ध के बाद भारत के लिए स्व-सरकार की मांग के लिए अभियान चलाया।
- उन्होंने अपने समाचार पत्र न्यू इंडिया और कॉमनवेल तथा सार्वजनिक बैठकों और सम्मेलनों के माध्यम से अभियान चलाया।
- दो होम रुल लीग की स्थापना की गई। प्रथम, अप्रैल, 1916 को पूना में बी. जी. तिलक द्वारा और दूसरा सितंबर, 1916 में मद्रास में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा।

- तिलक का आंदोलन महाराष्ट्र (बंबई को छोड़कर), कर्नाटक, मध्य भारत और बेरार पर केंद्रित था।
- एनी बेसेंट के आंदोलन ने शेष भारत (मुंबई सहित) को कवर किया।

ब्रिटिश भारत के दौरान समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की पूरी सूची

पत्रिका / जर्नल का नाम	**वर्ष और जहाँ जहाँ से प्रकाशित**	**संस्थापक / संपादक का नाम**
बंगाल गजट	1780, कलकत्ता	जेम्स ऑगस्टस हिक्की
सम्वाद कौमुदी (बंगाली में साप्ताहिक)	1821	राजा राम मोहन राय
मिरात-उल अकबर (फारसी में सबसे पहले पत्रिका)	1822, कोलकाता	राजा राम मोहन राय
बंगा-दूत (चार भाषाओं अंग्रेजी, बंगाली, फारसी, हिंदी में एक साप्ताहिक पत्रिका)	1822, कोलकाता	राजा राम मोहन राय और द्वारकानाथ ठाकुर
उदन्त मार्तण्ड (हिंदी का प्रथम समाचार पत्र) (साप्ताहिक)	1826, कोलकाता	**जुगलकिशोर सुकुल**
बॉम्बे टाइम्स (1861 के बाद से, टाइम्स ऑफ इंडिया)	सन 1838 में, बंबई	रॉबर्ट नाइट और थॉमस बेनेट
रास्ट गोफ्तार (ए गुजराती पाक्षिक)	1851	दादाभाई नौरोजी
हिन्दू पैट्रियट	1853, कलकत्ता	गिरीशचन्द्र घोष
सोम प्रकाश	1858, कलकत्ता	द्वारकानाथ विद्याभूषण
भारतीय आईना	1862, कलकत्ता	देवेन्द्रनाथ टैगोर और एनएन सेन

byjusexamprep.com

बंगाली (इस और अमृता बाजार पत्रिका- पहला स्थानीय भाषा का अखबार)	1862, कलकत्ता	गिरीश चन्द्र घोष (1879 में एसएन बैनर्जी ने अधिकार कर लिया)
राष्ट्रीय पेपर	1865, कलकत्ता	देवेंद्र नाथ टैगोर
अमृता बाजार पत्रिका (शुरुआत में बंगाली और बाद में अंग्रेजी दैनिक)	1868, जेस्सोर जिला	शिशिर कुमार घोष और मोतीलाल घोष
बंगदर्शन	1873, कलकत्ता	बंकिमचंद्र चटर्जी
स्टेट्समैन	1875, कलकत्ता	रॉबर्ट नाइट
हिन्दू	1878, मद्रास	जी एस अय्यर वीराघवचारी और सुब्बा राव पंडित
ट्रिब्यून	1881, लाहौर	दयाल सिंह मजीतिया
सुधारक		गोपाल गणेश अगरकर
हिन्दुस्तानी और एडवोकेट		जीपी वर्मा
केसरी (मराठी दैनिक) और मराठा (अंग्रेजी साप्ताहिक)	1881, बंबई	तिलक, चिपलूनकर, अगरकर
स्वदेशमित्रण	मद्रास	जी एस अय्यर
Paridasak (साप्ताहिक)		बिपिन चंद्र पाल
युगांतर	1906, बंगाल	बारीन्द्रनाथ घोष और भूपेन्द्रनाथ दत्ता
संध्या	1906, बंगाल	ब्राहमणबन्द्हब उपाध्याय
भारतीय समाजशास्त्री	लंडन	श्यामजी कृष्ण वर्मा
बंदे मातरम	पल्ली	मैडम भिकाजी कामा
फ्री हिन्दुस्तान	वैंकूवर	तारकनाथ दास
ग़दर	सैन फ्रांसिस्को	गदर पार्टी

byjusexamprep.com

तलवार	बर्लिन	वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय
बंबई क्रोनिकल (एक दैनिक)	1913, बंबई	फिरोज शाह मेहता, बीजी होर्निमान
हिंदुस्तान टाइम्स	1920, दिल्ली	अकाली दल के आंदोलन के एक भाग के रूप में के.एम. Pannikkar
नेता (अंग्रेजी में)		मदन मोहन मालवीय
बहिस्कृत भारत	1927	बी आर अम्बेडकर
कुडी अरासु (तमिल)	1910	ईवी रामास्वामी नायकर (पेरियार), एसएस मिराजकर, केएन जोगलेकर
बंदी जीवन	बंगाल	शचींद्रनाथ सान्याल
नेशनल हेराल्ड	1938, दिल्ली	जवाहर लाल नेहरू
तगजीन-उल-अखलाक (पत्रिका)	1871	सर सैयद अहमद खान
केसरी (मराठी डेली अखबार के)	1881	बाल गंगाधर तिलक
कॉमरेड (साप्ताहिक अंग्रेजी अखबार)	1911	मौलाना मोहम्मद अली
अल बलघ और अल-हिलाल (दोनों उर्दू साप्ताहिक समाचार पत्र)	1912	अबुल कलाम आजाद
प्रताप (हिंदी अखबार)	1913	गणेश शंकर विद्यार्थी
इंडिपेंडेंट न्यूज़ पेपर	1919	मोतीलाल नेहरू
चंद्रमा नायक (मराठी साप्ताहिक)	1920	बी आर अम्बेडकर
यंग इंडिया (साप्ताहिक जर्नल)	1919	एम के गांधी
नव जीवन (साप्ताहिक अख़बार)	1929	एम के गांधी
हरिजन (साप्ताहिक जर्नल)	1931	एम के गांधी
हिंदुस्तान दैनिक	1936	मदन मोहन मालवीय

byjusexamprep.com

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (1917-1947)

भारत में गांधी का उत्थान

एम. के. गांधी सन् 1915 में दक्षिण अफ्रीका (जहां वे 20 वर्षों से अधिक समय तक रहे) से भारत लौटे । वहां उन्होंने भारतीयों के साथ किए गए भेदभाव के खिलाफ एक शांतिपूर्ण आंदोलन का नेतृत्व किया और एक सम्मानित नेता के रूप में उभरे। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने अपने सत्याग्रह ब्रांड को विकसित किया। भारत में उन्होंने पहली बार बिहार के चंपारण में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ इस अस्त्र (टूल) का इस्तेमाल किया।

चंपारण सत्याग्रह (1917)

- स्वतंत्रता संग्राम में गांधी द्वारा प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन।
- नील कृषक, राजकुमार शुक्ला के आश्वासन पर गांधी बिहार के चंपारण में किसानों की परिस्थितियों की जांच के लिए गए।
- चंपारण संघर्ष को गांधी द्वारा सत्याग्रह पर पहला प्रयोग कहा जाता है।
- इस दौरान गांधी को लोगों ने 'बापू' और 'महात्मा' का नाम दिया।

अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)

- गांधीजी की गतिविधियों का अगला दृश्य अहमदाबाद में सन् 1918 में देखने को मिला जहां वेतन वृद्धि के लिए श्रमिकों और कपास वस्त्र मिल के मालिकों के बीच एक आंदोलन चल रहा था।
- गांधीजी जब मिल के मालिकों के साथ बातचीत कर रहे थे तब उन्होंने श्रमिकों को हड़ताल पर जाने और मजदूरी में 35% वृद्धि की मांग करने की सलाह दी।
- हड़ताल को वापस ले लिया गया और बाद में श्रमिकों की मांग के अनुसार उनके वेतन में 35% की वृद्धि की गई।
- अंबालाल साराभाई की बहन 'अनुसूइया बेन' इस संघर्ष में गांधीजी के मुख्य सहयोगियों में से एक थीं जिसमें उनके भाई और गांधीजी के मित्र मुख्य सलाहकारों में से एक थे।

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

- गुजरात के खेड़ा जिले में सूखे के कारण वर्ष 1918 नष्ट हुई फसलों का वर्ष था।
- कानून के अनुसार किसान छूट के हकदार थे यदि, उत्पादन सामान्य उत्पादन के एक चौथाई से कम था।

- गांधी के मार्गदर्शन के तहत सरदार वल्लभभाई पटेल ने अकाल के मद्देनज़र करों के संग्रह के विरूद्ध विरोध प्रदर्शन में किसानों का नेतृत्व किया।

रौलेट अधिनियम (1919)

- सन् 1917 में सर सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में उग्रवादी राष्ट्रवादी गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए एक समिति गठित की गई।
- केंद्रीय विधान परिषद द्वारा रौलैट अधिनियम को मार्च, 1919 में पारित किया गया था।
- इस अधिनियम के अनुसार किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जा सकता है।
- ऐसी गिरफ्तारी के खिलाफ कोई भी अपील या याचिका दायर नहीं की जा सकती।
- इस अधिनियम को काला अधिनियम (ब्लैक एक्ट) के नाम से जाना गया और इसका व्यापक स्तर पर विरोध किया गया।
- 6 अप्रैल, 1919 को एक अखिल भारतीय हड़ताल का आयोजन किया गया।
- पूरे देश में बैठकों का आयोजन किया गया।
- महात्मा गांधी को दिल्ली के पास गिरफ्तार कर लिया गया।
- पंजाब के दो प्रमुख नेताओं डॉ. सत्य पाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलेव को अमृतसर में गिरफ्तार किया गया।

जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919)

- जलियांवाला बाग नरसंहार 13 अप्रैल, 1919 को हुआ और यह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन (टर्निंग प्वाइंट) था।
- पंजाब में रौलैट सत्याग्रह के लिए अभूतपूर्व समर्थन था।
- 13 अप्रैल को बेशाखी दिवस (फसल उत्सव) पर जलियांवाला बाग (गार्डेन) में एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया।
- डायर ने बिना कोई चेतावनी दिए भीड़ पर गोलियों की बौछार करवा दी।
- आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार इस घटना में 379 लोग मारे गए और 1137 लोग गंभीर रूप से घायल हुए।
- रविंद्रनाथ टैगोर ने इसके विरोध में अपनी नाइटहुड की उपाधि को त्याग दिया।

खिलाफत आंदोलन

- खिलाफत आंदोलन का मुख्य कारण प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार थी।
- मुसलमानों ने सेवर्स संधि (1920) की कठोर शर्तों को स्वयं के अपमान के तौर पर लिया।
- संपूर्ण आंदोलन मुस्लिम विश्वास पर आधारित था कि खलीफा (तुर्की का सुल्तान) पूरे विश्व के मुसलमानों का धार्मिक प्रधान था।
- मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, एम. ए. अंसारी, सैफुद्दीन किचलेव और अली भाई इस आंदोलन के प्रमुख नेता थे।
- महात्मा गांधी का विशेष सरोकार देश की आजाद को हासिल करने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को एक करना था।
- खिलाफत आंदोलन को सन् 1920 में महात्मा गांधी द्वारा आरंभ किए गए असहयोग आंदोलन के साथ विलय कर दिया गया।

असहयोग आंदोलन (1920-1922)

- इसे दिसंबर, 1920 में नागपुर सत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा अनुमोदित किया गया।
- असहयोग आंद्लन के कार्यक्रम निम्न थेः
    - शीर्षकों और मानद पदों का अभ्यार्पण
    - स्थानीय निकायों की सदस्यता से इस्तीफा
    - 1919 अधिनियम के प्रावधानों के तहत आयोजित चुनावों का बहिष्कार
    - सरकारी कार्यक्रमों का बहिष्कार
- कोर्ट, सरकारी विद्यालयों और विश्वविद्यालयों का बहिष्कार।
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।
- राष्ट्रीय विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और निजी पंचायत न्यायालयों की स्थापना।
- स्वदेशी वस्तुओं और खादी को लोकप्रिय बनाना।
- राष्ट्रीय विद्यालयों जैसे काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ और जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना की गई।
- विधानसभा का चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस का कोई भी नेता आगे नहीं आया।
- सन् 1921 में वेल्स के राजकुमार के खिलाफ उनके भारत दौरे के दौरान बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया।
- ज्यादातर घरों में चरखों की सहायता से कपड़ा की बुनाई की जाने लगी।
- लेकिन चौरी चौरा घटना के बाद गांधी द्वारा 11 फरवरी, 1922 को सभी आंदोलनों को अकस्मात बुलाया गया।

- यू.पी. के गोरखपुर जिले में इससे पहले 5 फरवरी को क्रोधित भीड़ ने चौरी चौरा में स्थित पुलिस थाने को आग के हवाले कर दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी जलकर मारे गए।

स्वराज पार्टी

- मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास जैसे नेताओं ने 1 जनवरी, 1923 को कांग्रेस के भीतर एक अलग समूह का गठन किया जिसे स्वराज पार्टी के नाम से जाना गया।
- केंद्रीय विधान परिषद में मोतीलाल नेहरू पार्टी के नेता बने जबकि बंगाल में पार्टी की अध्यक्षता सी. आर. दास ने की।
- जून, 1925 में सी. आर. दास के निधन के बाद स्वराज पार्टी कमजोर पड़ना शुरू हो गई।

साइमन कमीशन

- नवंबर, 1927 में ब्रिटिश सरकार ने भारत सरकार अधिनियम, 1919 के कार्यों की जांच करने और परिवर्तनों हेतु सुझाव देने के लिए साइमन कमीशन को नियुक्त किया।
- आयोग में एक भी भारतीय प्रतिनिधि को शामिल न करते हुए अंग्रेजों को सम्मिलित करके आयोग का गठन किया गया।
- आयोग फरवरी, 1928 में भारत पहुंचा और इसने देशव्यापी विरोध का सामना किया।
- शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को कई स्थानों पर पुलिस द्वारा मारा-पीटागया। लाला लाजपत राय पर हमला किया गया जिसके बाद उनकी मृत्यु हो गई।

नेहरू रिपोर्ट (1928)

- इस बीच राज्य सचिव, लॉर्ड बीरकेनहेड ने भारतीयों को एक संविधान का निर्माण करने के लिए चुनौती दी।
- चुनौती को कांग्रेस द्वारा स्वीकार किया गया और 28 फरवरी, 1928 को एक अखिल पार्टी बैठक बुलाई गई।
- भारत के भविष्य के संविधान का खाका (ब्लूप्रिंट) तैयार करने के लिए आठ सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया।
- जिसकी अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू ने की।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934)

BYJU'S EXAM PREP
SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

- इस अशांतिपूर्ण माहौल में दिसंबर, 1929 में लाहौर में कांग्रेस के वार्षिक सत्र का आयोजन किया गया।
- जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में इस सत्र के दौरान कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज संकल्प को पारित किया।
- तथापि, सरकार ने नेहरू रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया, जिसके परिणामस्वरुप कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का आह्वान किया।
- कांग्रेस ने 26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस के तौर पर मनाया।
- सन् 1950 में जब भारतीय संविधान लागू हुआ तब इसी तारीख को गणतंत्र दिवस के रूप में घोषित किया गया।

दांडी यात्रा

- 12 मार्च, 1930 को गांधी ने नमक कानून को भंग करने के लिए अपने चुने हुए 79 अनुयायियों के साथ दांडी के लिए अपनी प्रसिद्ध यात्रा का आरंभ किया।
- वह 200 मील की दूरी तय करने के बाद 5 अप्रैल, 1930 को दांडी के तट पर पहुंचे।
- 6 अप्रैल को औपचारिक रूप से नमक कानून को भंग करके सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ किया।
- 9 अप्रैल को महात्मा गांधी ने इस आंदोलन का कार्यक्रम रखा जिसमें वर्तमान नमक कानून का उल्लंघन करने हेतु प्रत्येक गांव में नमक बनाना शामिल था।

गोलमेज सम्मेलन

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

- नवंबर, 1930 में लंदन में आयोजित किया गया और कांग्रेस द्वारा इसका बहिष्कार किया गया।
- जनवरी, 1931 में वार्ता के लिए अनुकूल माहौल बनाने का उद्देश्य।
- सरकार ने कांग्रेस पार्टी पर लगे प्रतिबंध को हटा लिया और जेल में बंद इसके नेताओं को रिहा कर दिया।
- 8 मार्च, 1931 को गांधी-इरविन संधि पर हस्ताक्षर किए गए।
- इस संधि के अनुसार, महात्मा गांधी सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करने और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए सहमत हो गए।
- सितंबर, 1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किया गया।

- महात्मा गांधी ने सम्मेलन में भाग लिया लेकिन वे निराशा के साथ भारत लौटे क्योंकि पूर्ण स्वतंत्रता की मांग और सांप्रदायिक मुद्दे पर कोई समझौता संपन्न नहीं किया जा सका।
- जनवरी, 1932 में सविनय असहयोग आंदोलन फिर से आरंभ हुआ।
- सरकार ने महात्मा गांधी और सरदार पटेल को गिरफ्तार करके कांग्रेस पार्टी पर प्रतिबंध लगाते हुए विरोध का जवाब दिया।

सांप्रदायिक पुरस्कार

- अगस्त, 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री, रामसे मैकडोनाल्ड द्वारा सांप्रदायिक पुरस्कार घोषित किए गए।

पूना संधि (1932)

- 16 अगस्त, 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड ने एक घोषणा की, जो सांप्रदायिक पुरस्कार के तौर पर सामने आई।
- महात्मा गांधी ने सांप्रदायिक पुरस्कारों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया और 20 सितंबर, 1932 को येरवदा जेल में आमरण अनशन पर बैठ गए।
- अंततः डॉ. अम्बेड़कर और गांधी के बीच एक समझौता हुआ।
- इस समझौते को पूना संधि के नाम से जाना गया। ब्रिटिश सरकार ने भी इसे मंजूरी प्रदान की।
- तदनुसार, विभिन्न प्रांतीय विधान मंडलों में सांप्रदायिक पुरस्कार में प्रदत्त 71 सीटों के बदले 148 सीटें उदासीन वर्गों के लिए आरक्षित की गईं।

तृतीय गोलमेज सम्मेलन 1932

- कांग्रेस ने पुनः इसमें भाग नहीं लिया।
- इसके बावजुद मार्च, 1933 में ब्रिटिश सरकार ने एक श्वेत पत्र (व्हाइट पेपर) जारी किया।
- जो भारत सरकार अधिनियम, 1935 के अधिनियमन के लिए आधार बना।

भारत सरकार अधिनियम, 1935
इस अधिनियम की मुख्य विशेषताएं निम्न थीं -

- केंद्र में ब्रिटिश भारत के प्रांतों और राजसी राज्यों के प्रांतों को सम्मिलित करके एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना हेतु प्रावधान किया गया।
- यह अस्तित्व में नहीं आया क्योंकि राजसी राज्यों ने संघ के लिए अपनी सहमति देने से इनकार कर दिया।
- तीन सूचियों अर्थात् संघीय, प्रांतीय और समवर्ती में शक्तियों का विभाजन।
- केंद्र में द्विशासन का आरंभ।
- गवर्नर-जनरल और उनके पार्षदों ने "आरक्षित विषयों" को प्रशासित किया।
- मंत्रिपरिषद "हस्तांतरित" व्यक्तियों के लिए जिम्मेदार थी।
- द्विशासन का उन्मूलन और प्रांतों में प्रांतीय स्वायत्तता का आरंभ।
- गवर्नर को प्रांतीय कार्यकारिणी का प्रमुख बनाया गया लेकिन उन्हें मंत्रिपरिषद की सलाह पर प्रशासन को चलाने (बाध्य नहीं) की उम्मीद थी ।
- बंगाल, मद्रास, बॉम्बे, संयुक्त प्रांत, बिहार और असम के प्रांतीय विधानमंडलों को द्विशासी बनाया गया।
- सिक्ख, यूरोपीय, भारतीय ईसाईयों और एंग्लो भारतीयों के लिए अलग निर्वाचन-क्षेत्र के सिद्धांत पर विस्तार किया गया।
- मुख्य न्यायाधीश तथा 6 न्यायाधीशों के साथ दिल्ली में एक संघीय न्यायालय की स्थापना की गई।

द्वितीय विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन

- सन् 1937 में भारत सरकार अधिनियम, 1935 के प्रावधानों के तहत चुनाव आयोजित किए गए।
- भारत के सात राज्यों में कांग्रेस मंत्रालयों का गठन किया गया।
- 1 सितंबर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हुआ।
- ब्रिटिश सरकार ने भारत के लोगों से परामर्श किए बिना युद्ध में देश को शामिल कर दिया।
- विरोध प्रदर्शन के फलस्वरुप प्रांतों में कांग्रेस मंत्रियों ने 12 दिसंबर, 1939 को इस्तीफा दे दिया।
- मुस्लिम लीग ने उस दिन को उद्धार दिवस के रूप में मनाया।
- मार्च, 1940 में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के निर्माण की मांग की।

अगस्त प्रस्ताव

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीयों के सहयोग को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार ने 8 अगस्त, 1940 को एक घोषणा की, जिसे 'अगस्त प्रस्ताव' के रूप में जाना गया। उसमें निम्न प्रस्तावित था -

- भारत के लिए स्वतंत्र उप-निवेश का उद्देश्य।
- वायसरॉय की कार्यकारी परिषद का विस्तार तथा रक्षा, अल्पसंख्यक अधिकारों, राज्यों के साथ संधियों एवं अखिल भारतीय सेवाओं से संबंधित सरकार के दायित्वों की पूर्ति के लिए उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अवधारणाओं के अनुसार युद्ध के उपरांत भारतीय को सम्मिलित करके संविधान सभा की स्थापना करना।
- अल्पसंख्यकों की सहमति के बिना भविष्य में किसी भी संविधान को अपनाया नहीं जाएगा।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

- भारतीयों के सहयोग को सुरक्षित करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार ने 8 अगस्त, 1940 को एक घोषणा की।
- अगस्त प्रस्ताव में यह परिकल्पना की गई कि युद्ध के बाद नए संविधान को भारतीयों का प्रतिनिधि निकाय स्थापित करेगा।
- आचार्य विनोबा भावे पहले व्यक्ति थे जिन्हें सत्याग्रह का प्रस्ताव दिया गया तथा उन्हें तीन महीने की कारावास की सजा सुनाई गई।
- जवाहरलाल नेहरू दूसरे सत्याग्रही थे और उन्हें चार महीने की सजा सुनाई गई।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह लगभग 15 महीने तक जारी रहा।

क्रिप्स मिशन (1942)

- विकृत युद्धकालीन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के मध्य में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सहयोग को बनाए रखने के लिए 23 मार्च, 1942 को सर स्टैफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा। इसे क्रिप्स मिशन के नाम से जाना गया।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942-1944)

- क्रिप्स मिशन की असफलता और भारत पर जापानी आक्रमण के डर से महात्मा गांधी ने ब्रिटिशों के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ किया।

- महात्मा गांधी का विश्वास था कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद ही अंतरिम सरकार बनाई जा सकती है और तब ही हिन्दू-मुस्लिम की समस्या का हल निकाला जा सकता है।
- अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक 8 अगस्त, 1942 को मुंबई में हुई और प्रसिद्ध भारत छोड़ो संकल्प को पारित किया।
- उसी दिन गांधी ने "करो या मरो' का आह्वान किया।
- 8 एवं 9 अगस्त, 1942 को सरकार ने कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।
- महात्मा गांधी को पूना के जेल में रखा गया था।
- पंडित जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आज़ाद और अन्य नेताओं को अहमदनगर किले में कैद कर लिया गया।
- इस समय राम मनोहर लोहिया, अच्युत और एस. एम. जोसी ने नेतृत्व प्रदान किया।
- इस आंदोलन में जयप्रकाश नारायण की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- आंदोलन में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में छात्रों ने भी अपने विद्यालय और विश्वविद्यालय छोड़ दिए।
- देश के युवाओं ने भी देशभक्ति के साथ इस आंदोलन में भाग लिया।
- सन् 1944 में महात्मा गांधी को जेल से रिहा किया गया।
- भारत छोड़ो आंदोलन देश की स्वतंत्रता के लिए अंतिम प्रयास था।
- ब्रिटिश सरकार ने 538 राउंड फायरिंग के आदेश दिए। लगभग 60,229 व्यक्तियों को जेल में डाल दिया गया।
- कम से कम 7,000 लोग मारे गए।
- इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया। इसने भारतीयों के मध्य बहादुरी, उत्साह और संपूर्ण बलिदान की भावनाओं को जागृत किया।

राजगोपालाचारी सूत्र (फॉर्मूला)

- राजगोपालाचारी अनुभवी कांग्रेसी नेता थे, उन्होंने कांग्रेस-लीग सहयोग के लिए एक सूत्र (फार्मूला) तैयार किया, जिसे गांधी ने स्वीकार किया।
- यह पाकिस्तान के लिए लीग की मांग की उपलक्षित स्वीकृति थी।
- वीर सावरकर के नेतृत्व में हिंदू नेताओं ने सी. आर. योजना की निंदा की।

देसाई-लियाकत संधि

- कांग्रेस के नेता भूलाभाई देसाई ने मुस्लिमों के नेता लियाकत अली खान के साथ केंद्र में एक अंतरिम सरकार के गठन हेतु मसौदा तैयार किया जिसमें निम्न शामिल थे-
  - केंद्रीय विधायिका में कांग्रेस और लीग द्वारा नामांकित व्यक्तियों की संख्या एक-समान होगी।
  - अल्पसंख्यकों के लिए **20%** सीटें आरक्षित होगी।
- उक्त बातों को ध्यान में रखकर कांग्रेस और लीग के बीच कोई भी समझौता नहीं किया जा सका।
- लेकिन तथ्य यह है कि कांग्रेस और लीग के बीच समानता का फैसला किया गया जो की दूरगामी था।

वॉवेल योजना

- वायसराय, लॉर्ड वावेल द्वारा जून, 1945 में शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- लंबित गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद का पुनर्निर्माण करने का उद्देश्य नईं संविधान की तैयारी करना था।

भारतीय राष्ट्रीय सेना

- 2 जुलाई, 1943 को सुभाष चंद्र बोस सिंगापुर पहुंचे और वहां 'दिल्ली चलो' का नारा दिया।
- उन्हें भारतीय स्वतंत्रता लीग का अध्यक्ष बनाया गया और जल्द ही उन्हें भारतीय राष्ट्रीय सेना का सर्वोच्च कमांडर बना दिया गया।
- भारतीय राष्ट्रीय सेना के तीन ब्रिगेडों के नाम सुभाष ब्रिगेड, गांधी ब्रिगेड और नेहरू ब्रिगेड थे।
- सेना की महिला शाखा का नाम रानी लामिआ के नाम पर था।
- भारतीय राष्ट्रीय सेना ने कोहिमा पर अपनी जीत दर्ज करने के बाद इम्फाल की तरफ चढ़ाई की।
- सन् 1945 में जापान के आत्मसमर्पण के बाद।
- भारतीय राष्ट्रीय सेना अपने प्रयासों में असफल रही। कुछ परिस्थितियों के तहत सुभाष चंद्र बोस ताइवान गए।
- जब वे टोक्यो जा रहे थे तब 18 अगस्त, 1945 को विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।
- भारतीय राष्ट्रीय सेना के सैनिकों का परीक्षण दिल्ली के लाल किले में आयोजित किया गया।

- पंडित जवाहरलाल नेहरू, भूलाभाई देसाई और तेज बहादुर सप्रू ने सैनिकों की ओर से केस लड़ा।

कैबिनेट मिशन (1946)

- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात लॉर्ड एटली इंग्लैंड के प्रधानमंत्री बन गए।
- 15 मार्च, 1946 को लॉर्ड एटली ने एक ऐतिहासिक घोषणा की जिसमें स्व-निर्धारण के अधिकार और भारत के लिए संविधान के निर्धारण को स्वीकार किया गया।
- इसके परिणामस्वरुप, ब्रिटिश कैबिनेट के तीन सदस्यों अर्थात् पैथिक लॉरेंस, सर स्टैफोर्ड क्रिप्स और ए. वी. अलेक्जेंडर को भारत भेजा गया। इसे कैबिनेट मिशन के नाम से जाना गया।
- कैबिनेट मिशन ने संवैधानिक समस्याओं के समाधान के लिए एक योजना तैयार की।
- प्रांतों के तीन समूहों के लिए उनके अलग संविधान के अधिकार हेतु प्रावधान किया गया।
- कैबिनेट मिशन ने ब्रिटिश भारत और राजसी राज्यों अर्थात् दोनों को सम्मिलित करके भारत संघ के गठन का भी प्रस्ताव रखा।
- नई सरकार चुने जाने तक प्रांतों में निहित होने के लिए अवशिष्ट शक्तियों को छोड़कर संघ केवल विदेशी मामलों, रक्षा और संचार का प्रभारी रहेगा।
- मुस्लिम लीग और कांग्रेस दोनों ने इस योजना को स्वीकार कर लिया।
- इसके परिणामस्वरुप, संविधान सभा के गठन के लिए जुलाई, **1946** में चुनावों का आयोजन किया गया।
- कांग्रेस ने कुल 214 सामान्य सीटों में से 205 सीटों पर जीत हासिल की।
- मुस्लिम लीग ने 78 मुस्लिम सीटों में से 73 सीटों पर जीत हासिल की।
- 2 सितंबर, 1946 को जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार का गठन किया गया।

माउंटबेटन योजना (1947)

- 20 फरवरी, 1947 को प्रधानमंत्री एटली ने लोकसभा (हाउस ऑफ़ कॉमन्स) में घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार का निश्चित उद्देश्य जिम्मेदार भारतीयों के हाथों में शक्ति को हस्तांतरित करना है।
- अतः शक्ति के स्थानांतरण को प्रभावित करने के लिए एटली ने लॉर्ड माउंटबेटन को भारत के वायसराय के रूप में भेजने का निर्णय लिया।

- 24 मार्च, 1947 को व्यापक शक्तियों से लैस लॉर्ड माउंटबेटन भारत के वायसराय बन गए।
- भारत का विभाजन और पाकिस्तान का निर्माण उसके लिए अपरिहार्य था।
- व्यापक परामर्श के बाद लॉर्ड माउंटबेटन ने 3 जून, 1947 को भारत के विभाजन की योजना प्रस्तुत की।
- अंततः भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के तहत कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने माउंटबेटन योजना को मंजूरी दे दी।
- ब्रिटिश सरकार ने 18 जुलाई, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम को लागू करके माउंटबेटन योजना को औपचारिक अनुमोदन प्रदान किया।
- देश का विभाजन भारत और पाकिस्तान के तौर पर **15** अगस्त, **1947** से लागू हुआ।

क्रांतिकारी आंदोलन

चाफेकर बंधु (1897)

- यह 1857 के बाद एक ब्रिटिश अधिकारी की पहली राजनीतिक हत्या थी।
- दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव चाफेकर ने प्लेग महामारी की विशेष समिति के अध्यक्ष डब्ल्यू.सी. रैंड पर गोली चलाई।
- चाफेकर बंधुओं को फांसी दे दी गई।

अलीपुर बम षड्यंत्र (1908)

- डगलस किंग्सफोर्ड एक ब्रिटिश मुख्य न्यायाधीश था जो मुजफ्फरपुर में फेंके गए बम का लक्ष्य था।
- हमले में उसके बजाय दो महिलाओं की मौत हो गई।
- बम फेंकने वाले प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस में से प्रफुल्ल चक्की ने आत्महत्या कर ली जबकि बोस (18 वर्ष) को पकड़ लिया गया और मौत की सजा सुनाई।
- इस मुकदमे में अरबिंदो घोष, बारिंद्र घोष, कन्हाई लाल दत्त और **अनुशीलन समिति** के 30 अन्य सदस्यों पर भी मुकदमा चलाया गया।

कर्जन वायली की हत्या (1909)

- 1 जुलाई 1909 की शाम को मदन लाल ढींगरा ने लंदन में उनकी हत्या कर दी।
- मदन लाल ढींगरा का **इंडिया हाउस** से गहरा संबंध था।

हावड़ा गिरोह मुकदमा (1910)

- कलकत्ता में निरीक्षक शमसुल आलम की हत्या के कारण अनुशीलन समिति के 47 बंगाली भारतीय राष्ट्रवादियों की गिरफ्तारी और उन पर मुकदमा चलाया गया।
- उन्होंने अनुशीलन समिति के क्रांतिकारी गिरोह को उजागर किया जो हत्या और अन्य डकैतियों से जुड़े थे।

दिल्ली लाहौर षड्यंत्र मामला (1912)

- भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की हत्या का प्रयास किया गया।
- ब्रिटिश राजधानी के कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरण के अवसर पर, वायसराय की गाड़ी पर एक बम फेंका गया था। जिसमें लॉर्ड हार्डिंग घायल हो गए और एक भारतीय मुलाज़िम की मौत हो गई।
- इसका नेतृत्व रास बिहारी बोस और सचिन चंद्र सान्याल ने किया था।

गदर आंदोलन (1913)

- सन् 1907 में लाला हरदयाल ने गदर नामक एक साप्ताहिक पत्रिका शुरू की।
- अधिक नेताओं के साथ उनके संपर्क ने सन् 1913 में उत्तरी अमेरिका में गदर पार्टी की स्थापना का नेतृत्व किया। इस आंदोलन की योजना भारतीय सैनिकों की वफादारी को कम करना, गुप्त समाज का गठन करना और ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या आदि थी।
- यह आंदोलन **कोमागाता मारू घटना** के कारण तीव्र हो गया था।

काकोरी कांड (1925)

- उत्तर प्रदेश के काकोरी के समीप ट्रेन लूट का मामला।
- इसका नेतृत्व **हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन** के युवाओं ने किया जिसमें राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाकुल्ला खान और अन्य शामिल थे।
- 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना कानपुर में सचिन सान्याल और जोगेश चंद्र चटर्जी ने की थी, जिसका उद्देश्य औपनिवेशिक सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए सशस्त्र क्रांति की योजना बनाना था।
- सितंबर, 1928 में फिरोज शाह कोटला में एकत्रित हुए कई प्रमुख क्रांतिकारियों ने संघ के नाम में 'समाजवादी' जोड़कर एक नया संघ बनाया।

चटगांव शस्त्रागार लूट (1930)

- इसका नेतृत्व सूर्य सेन ने किया था और अन्य लोगों में लोकनाथ बाल, कल्पना दत्त, अंबिका चक्रवर्ती, सुबोध रॉय आदि शामिल थे, वे हथियारों को नहीं लूट पाए, लेकिन उन्होंने टेलीफोन और टेलीग्राफ के तार काट दिए।

सेंट्रल असेंबली बम कांड (1929) और लाहौर षड्यंत्र कांड (1931)

- भगत सिंह, सुखदेव, आजाद और राजगुरु ने 1928 में जनरल सॉन्डर्स की हत्या करके लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया।
- बटुकेश्वरदत्त और भगत सिंह ने जन सुरक्षा विधेयक और व्यापार विवाद विधेयक के पारित होने के खिलाफ सेंट्रल असेंबली में बम फेंका। बम फेंकने का उद्देश्य गतिविधियों को लोकप्रिय बनाना था।
- भगत सिंह को जनरल सॉन्डर्स की हत्या के मामले में गिरफ्तार किया गया था; यह लाहौर षड्यंत्र कांड के नाम से जाना जाता था।
- मुकदमे के बाद, मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गई और
- उसी वर्ष फरवरी में इलाहाबाद में पुलिस के साथ लड़ते हुए चंद्रशेखर आजाद की भी मौत हो गई।

महत्वपूर्ण क्रांतिकारी संगठन

संगठन का नाम	स्थापना वर्ष	प्रभावित क्षेत्र	संस्थापक/संबंधित सदस्य
अनुशीलन समिति	1902	बंगाल क्षेत्र	प्रोमोध मित्तर, जतीन्द्रनाथ बनर्जी, बरींद्र नाथ घोष और अन्य
युगान्तर पार्टी	प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सक्रिय	बंगाल क्षेत्र	अरबिंदो घोष, बरींद्र घोष और जतीन्द्रनाथ मुखर्जी या बाघा जतिन
मित्र मेला	1899	नासिक, बॉम्बे और पूना क्षेत्र	सावरकर और उनके भाई
अभिनव भारत/ यंग इंडिया सोसाइटी (मित्र	1904	नासिक, बॉम्बे और पूना क्षेत्र	सावरकर और उनके भाई

मेला इसमें शामिल हो गया)			
स्वदेशी बंधव समिति	1905	बंगाल क्षेत्र	अश्विनी कुमार दत्त
हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)	1924	कानपुर	सचीन्द्र नाथ सान्याल, नरेंद्र मोहन सेन, प्रतुल गांगुली
हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन आर्मी (HSRA)	1928	नई दिल्ली	चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव थापड़
भारत नौजवान सभा	1926	लाहौर	भगत सिंह
इंडियन होम रूल सोसाइटी	1905	लंदन	श्यामजी कृष्ण वर्मा
गदर पार्टी	1913	अमेरिका और कनाडा (उत्तरी अमेरिका)	लाला हरदयाल
भारतीय स्वतंत्रता लीग	1907	कैलीफोर्निया (अमेरिका)	तारकनाथ दास
भारतीय स्वतंत्रता के लिए बर्लिन समिति	1915	बर्लिन	जर्मन विदेश कार्यालय की मदद से वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय, भूपेंद्रनाथ दत्त, लाला हरदयाल और अन्य

byjusexamprep.com